वृश्चिकलग्न और धन योग

वृश्चिकलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धन प्रदाता ग्रह बृहस्पति है। धनेश बृहस्पति की शुभाशुभ स्थिति से, धन स्थान से संबंध स्थापित करने वाले ग्रहों की स्थिति, योगायोग एवं बृहस्पति तथा धन भाव पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश मंगल, भाग्येश चंद्र एवं लाभेश बुध की अनुकूल स्थितियां वृश्चिकलग्न में जन्मे जातकों के धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को बढ़ाने में सहायक होती है।

वैसे वृश्चिकलग्न के लिए बुध, मंगल, शनि अशुभ होते हैं। बृहस्पति शुभ। सूर्य चंद्र राजयोगकारक होते हैं। बृहस्पति मारकेश होते हुए भी मारक नहीं होता। बुध अष्टमेश होने से अनिष्ट फलदायक है। यह पूर्ण मारकेश का कार्य करेगा। वृश्चिकलग्न के लिए बुध परम पापी है। शुक्र व्ययेश होने से मारक है।

राजयोगकारक– सूर्य, चंद्र, बृहस्पति, यदि मंगल स्वगृही हो तो राजयोगकारक होगा।

सफल योग– 1. चंद्र+मंगल 2. चंद्र+शनि 3. चंद्र+सूर्य 4. चंद्र+शुक्र।

निष्फल योग– 1. मंगल+बृहस्पति, 2. बृहस्पति+शुक्र।

अशुभ योग– 1. मंगल+बुध, 2. मंगल+शनि, 3. मंगल+शुक्र।

लक्ष्मी योग–बृहस्पति केन्द्र त्रिकोण में, बुध दशम या एकादश में, मंगल तृतीय में।

विशेष योगायोग

1. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति यदि कन्या राशि में तथा बुध यदि धनु या मीन राशि में परस्पर परिवर्तन योग करके बैठा हो तो जातक भाग्यशाली होता है तथा जीवन में खूब धन कमाता है।

2. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति कर्क, धनु, मीन राशि में हो तो व्यक्ति धनाध्यक्ष होता है, लक्ष्मी ऐसे जातक की चेरी के समान सेवा करती है।

3. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा कर्क या वृष राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से ही बहुत धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति धन के मामले को लेकर भाग्यशाली होता है।

4. वृश्चिकलग्न हो, द्वितीयस्थ बृहस्पति, बुध व शुक्र के साथ हो, अथवा द्वितीयस्थ बृहस्पति एवं बुध शुक्र से दृष्ट हो तो व्यक्ति राजा के समान धनशाली व ऐश्वर्यवान होता है।

5. वृश्चिकलग्न में मंगल, शनि, शुक्र और बुध इन चार ग्रहों की युति हो तो जातक महाधनी होता है।

6. वृश्चिकलग्न हो, पंचम में स्वगृही बृहस्पति हो, लाभ स्थान में चंद्र एवं मंगल हो तो **महालक्ष्मी योग** बनता है। ऐसा जातक खूब धनवान होता है।

7. वृश्चिकलग्न हो, पंचमस्थ बृहस्पति हो तथा लाभ स्थान में स्वगृही बुध हो तो जातक अति धनाढ्य होता है। ऐसा जातक अपने भुजबल से शत्रुओं को परास्त करता हुआ अखण्ड राज्यलक्ष्मी को भोगता है।

8. वृश्चिकलग्न में मंगल कन्या राशि में हो एवं लाभेश बुध लग्न में हो तो जातक 33 वर्ष की आयु में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को अचानक रुपया मिलता है।

9. वृश्चिकलग्न में सूर्य यदि केन्द्र-त्रिकोण में हो तथा बृहस्पति स्वगृही हो तो जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् व्यक्ति सामान्य परिवार में जन्म लेकर धीरे-धीरे अपने पराक्रम व पुरुषार्थ से लक्षाधिपति व कोट्याधिपति हो जाता है। ऐसे जातक का भाग्योदय प्राय: 28 से 32 वर्ष की आयु में होता है।

10. वृश्चिकलग्न हो, लग्नेश मंगल, धनेश बृहस्पति, भाग्येश बुध और लाभेश सूर्य यदि अपनी-अपनी उच्च या स्वराशि में हो तो जातक करोड़पति होगा।

11. वृश्चिकलग्न हो, लग्न में मंगल, बुध, शुक्र एवं शनि हो तो जातक करोड़पति होता है।

12. वृश्चिकलग्न के लाभ स्थान में राहु, शुक्र, शनि और मंगल की युति हो जातक अरबपति होता है।

13. वृश्चिकलग्न में धनेश बृहस्पति यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान में हो "**धनहीन योग**' की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण

उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता। सदैव रुपयों की कमी बनी रहता है। इस योग की निवृत्ति हेतु गले में अभिमंत्रित ''गुरुयंत्र'' धारण करना चाहिए। पाठक चाहे तो ''गुरुयंत्र'' हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

14. वृश्चिकलग्न में धनेश बृहस्पति आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न में हो या लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गढ़े हुये धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिल सकता है पर रुपया पास में टिकेगा नहीं।

15. चंद्रमा से 3/6/10/11वें स्थान में शुभ ग्रह हो तो **'वसुमति योग'** बनता है। इस योग के कारण जातक युवावस्था में ही लखपति हो जाता है।

16. वृश्चिकलग्न में मंगल यदि लग्नस्थ हो तो **'रुचक योग'** बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

17. वृश्चिकलग्न में सुखेश शनि, लाभेश बुध नवम भाव में हो एवं मंगल से दृष्ट हो तो जातक को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

18. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति+चंद्र की युति धनु राशि, कुंभ राशि, मीन राशि या कर्क राशि में हो तो इस प्रकार के **'गजकेसरी योग'** के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

19. वृश्चिकलग्न में धनेश बृहस्पति अष्टम में, अष्टमेश मंगल धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

20. वृश्चिकलग्न में तृतीयेश शनि लाभ स्थान में एवं लाभेश बुध यदि तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, भागीदार एवं मित्रों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

21. वृश्चिकलग्न में बलवान बृहस्पति के साथ यदि चतुर्थेश शनि की युति हो तो व्यक्ति को माता, मातृपक्ष द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

22. लग्न में 10वें स्थान में शुक्र हो अथवा चंद्रमा से 10वें स्थान पर शुभ ग्रह बैठा हो तो जातक प्रसिद्ध, गुणवान, ख्याति प्राप्त, चरित्रवान एवं धनवान होता है।

23. लग्न में बृहस्पति वृश्चिक राशि का हो, बुध कहीं केन्द्र में हो तथा नवमेश अथवा एकादशेश से युक्त हो तो जातक धनवान होता है।

24. लग्न में शनि, मंगल हो तथा बृहस्पति साथ में हो या बुध हो तो भिक्षुक योग अवश्यमेव होता है।

25. बृहस्पति का संबंध षष्ठेश-अष्टमेश या द्वादशेश के साथ हो तो जातक महादरिद्री होता है।

26. चंद्रमा दूसरे घर में स्थित हो, लग्नेश षष्टम भवन में तथा छठे घर का स्वामी लग्न में हो तो दरिद्र योग होता है।

27. बृहस्पति व बुध पंचम स्थान में हो तथा चंद्रमा 11वें भावस्थ हो तो जातक करोड़पति होता है।

28. बुध 10वें स्थान में तथा बृहस्पति चौथे भाव में बैठकर परस्पर दृष्ट डाल रहे हों तथा भाग्येश उच्च का सप्तम भाव में विराजमान हो तो जातक का ससुराल प्रबल व धनाढ्य होता है।

29. बृहस्पति, शुक्र दोनों मकर राशि में तृतीय स्थान में हों तो उस जातक के संचित धन को कुपुत्र उड़ा देते हैं तथा उसे संतान सुख प्राप्त नहीं होता।

30. बृहस्पति दशम भाव में शनि चतुर्थ भाव में हो तो जातक को भूमि से अत्यधिक लाभ होता है।

31. छठे भाव में बुध हो तो जातक रोगी एवं लक्ष्याधिपति दोनों साथ-साथ होता है।

32. लग्नेश जहां बैठा हो, उस राशि का स्वामी यदि स्वगृही या 5/9 भवन में या अपने मूल त्रिकोण अथवा केन्द्र में बैठा हो तो 45 वर्ष में जातक का भाग्योदय होता है तथा भूसंपत्ति प्राप्ति करता है।

33. भाग्येश जिस नवांश में हो उसका स्वामी यदि उच्च राशि में पंचमेश के साथ भाग्य स्थान में हो तो जातक लक्ष्मीवान, पुत्रवान व जातक समृद्धिशाली होता है।

34. लग्नेश धन भावगत हो या धनेश-लाभेश बृहस्पति, बुध एवं लग्नेश मंगल के साथ लाभस्थ हो तो गुप्त धन की प्राप्ति होती है।

35. सूर्य लग्न, चंद्र लग्न, लग्नेश तथा शुभ द्वितीय, पंचमेश, बृहस्पति सब की परस्पर युति या दृष्टि हो तथा जातक धनवान एवं उच्च पदाधिकारी होता है।

36. चंद्रमा केन्द्र में हो, चंद्रमा उच्च का हो, वृश्चिक का सूर्य लग्न में हो, तुला का स्वगृही शुक्र द्वादश भावस्थ हो, बृहस्पति ध्रुव केन्द्र में हो, बुध चंद्र से 8वें पड़ा हो तो जातक का मासिक आय कई सहस्र होती है।

37. वृश्चिकलग्न में यदि मीन का बृहस्पति पंचम में हो, प्रथम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

38. वृश्चिकलग्न में बलवान बृहस्पति यदि षष्टेश मंगल से युति करके बैठा हो तथा धनवान शनि से दृष्ट हो तो जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रु को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

39. वृश्चिकलग्न में बलवान बृहस्पति की सप्तमेश शुक्र से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

40. वृश्चिकलग्न में बलवान बृहस्पति की नवमेश सूर्य से युति हो तो ऐसा जातक राजा से, राज्य सरकार, सरकारी अधिकारी एवं ठेकों से काफी धन कमाता है।

41. वृश्चिकलग्न में बलवान बृहस्पति की दशमेश बुध से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा संरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

42. वृश्चिकलग्न में दशम भाव का स्वामी बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। ऐसा जातक जन्म स्थान में नहीं कमा पाता, उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

43. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य तुला राशि में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

44. धन स्थान में पाप ग्रह हो तथा लाभेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

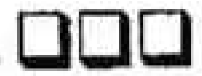
45. वृश्चिकलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा बृहस्पति से छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो **शकट योग** बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव रहता है।

46. वृश्चिकलग्न में धनेश बृहस्पति अस्त हो, नीच राशि (मकर) में हो, तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋण ग्रस्त रहता है, कर्जा उसके सिर से नहीं उतरता।

47. वृश्चिकलग्न में लाभेश बुध वक्री होकर कहीं भी बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात धनहानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, अतः सावधान रहें।

48. वृश्चिकलग्न में लाभेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें हो तथा लाभेश अस्तगत हो व पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

49. वृश्चिकलग्न में अष्टमेश बुध शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।



वृश्चिकलग्न और विवाह योग

1. चतुर्थ भाव में अकेला शनि हो तो घर में पत्नी का शासन चलता है तथा जातक के वीर्य में न्यूनता रहती है।
2. सप्तम भाव में शुक्र, शनि व राहु की युति व्यक्ति को धूर्त, लंपट व निश्चय ही पर स्त्रीगामी या पर पुरुषगामी बना देती है।
3. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा हो, शुक्र वृश्चिक राशि का हो और उसे पाप ग्रह देखते हों तो जातक स्त्री पर पुरुषगामिनी होती है।
4. वृश्चिकलग्न में शनि लग्नस्थ चंद्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थित भी बन सकती है।
5. वृश्चिकलग्न में शनि, छठे, आठवें या बारहवें हो, सूर्य द्वितीय भाव में हो और लग्नेश मंगल निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
6. वृश्चिकलग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एवं सप्तमेश शुक्र बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
7. वृश्चिकलग्न में सूर्य, शनि व शुक्र कहीं भी एकत्रित हों, मंगल निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. वृश्चिकलग्न में शुक्र आठवें हो, शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में सूर्य या चंद्रमा हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. वृश्चिकलग्न में सप्तमेश शुक्र के साथ सूर्य और चंद्रमा स्थित हो तो ऐसे में शुक्र अत्यन्त पापी हो जाता है। ऐसी स्थिति में प्रथमतः जातक का विवाह नहीं होता। यदि विवाह हो भी जाता है तो जातक को अविवाहित की तरह जीवन यापन करना पड़ता है।

10. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अंतर्जातीय विवाह करता है।

11. वृश्चिकलग्न में शनि या मंगल लग्नगत हो या नवमांश कुण्डली लग्न से सप्तम भाव वाली हो तो जातक को दो विवाह होते हैं।

12. वृश्चिकलग्न में द्वितीयेश बृहस्पति वक्री हो अथवा द्वितीय भाव में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

13. वृश्चिकलग्न में सप्तमेश शुक्र वक्री हो, सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी भी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आता है। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

14. वृश्चिकलग्न हो, लग्न में चंद्रमा व शुक्र हो, पाप ग्रह उन्हें देखते हो तो ऐसी स्त्री पर पुरुषगामिनी होती है। उसके व्याभिचार कर्म में उसकी माता या मातातुल्य किसी वृद्धा स्त्री का पूर्ण सहयोग होता है।

15. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा यदि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ) राशि में हो तो ऐसी स्त्री अक्षतयोनि होती है।

16. वृश्चिकलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नूतन वस्त्र पहन कर पर पुरुषों का संग करती है एवं कुल की मर्यादा को नष्ट कर देती है।

17. वृश्चिकलग्न में मंगल आठवें हो तो स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल होती है। ऐसी स्त्री प्रेमविवाह करती है तथा स्वच्छन्द यौनाचार में विश्वास रखती है।

18. वृश्चिकलग्न में सप्तमेश शुक्र बारहवें हो, साथ में सूर्य, चंद्र एवं बुध हो तो ऐसे जातक की पत्नी अल्पायु में गुजर जाती है। जातक अपनी साली या ससुराल पक्ष की अन्य स्त्री से विवाह करता है।

19. वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तम में हो, शुभ ग्रह उसे देखते हों तो जातक की पत्नी अत्यन्त सुन्दर, स्त्री-धर्म परायण एवं पतिव्रता होती है तथा विवाह के बाद पति के सौभाग्य को चमकाती है।

20. वृश्चिक में उच्च का चंद्र यदि सप्तम भाव में हो स्त्री सुन्दर, चतुर, पतिव्रता, मधुरभाषिणी, धार्मिक, लज्जाशील विवेकयुक्त, धनी एवं पतिसुख से परिपूर्ण होती है।

21. वृश्चिकलग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट शुक्र एवं चंद्रमा कहीं भी बैठें हों तो ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

22. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा यदि (2/4/6/8/10/12) राशि में हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त कोमल व मृदु स्वभाव की महिला होती है।

23. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति, बुध, शुक्र एवं मंगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात विदुषी, सच्चरित्र वाली एवं सभ्य महिला होती है।

24. वृश्चिकलग्न में चंद्र और शुक्र लग्नस्थ, पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो ऐसी स्त्री अपनी माता सहित पर पुरुषगामिनी होती है।

25. वृश्चिकलग्न में चंद्र और शुक्र लग्नस्थ हो तथा पंचम स्थान पाप ग्रहों से दृष्ट हो वह नारी वन्ध्या होती है।

26. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा आठवें स्वगृही बुध के साथ हो तो ऐसी स्त्री काकवन्ध्या होती है अर्थात् एक बार ही प्रसूता होती है।

27. वृश्चिकलग्न में सप्तमेश शुक्र स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक या कुंभ) में हो तथा चंद्रमा चर राशि (मेष, कर्क, तुला या मकर) में हो तो ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है।

28. वृश्चिकलग्न में लग्नस्थ स्वगृही मगल के साथ अष्टमेश बुध हो तो "**द्विभार्या योग**" बनता है। ऐसा जातक दो नारियों से रमण करता है।

28. वृश्चिकलग्न में सप्तमेश शुक्र यदि द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो पूर्ण '**व्याभिचारी योग**' बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न और संतान योग

1. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति यदि आठवें हो तो जातक के अल्प संतति होती है।
2. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति अस्त हो, या पाप पीड़ित, पाप ग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तो जातक के पुत्र नहीं होता।
3. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति यदि कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक की पहली संतान कन्या होती है।
4. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति विषम राशियों में हो तथा सूर्य या मंगल से युत या दृष्ट हो तो जातक के प्रथम संतान पुत्र ही होता है।
5. वृश्चिकलग्न में पंचमस्थ बृहस्पति मीन राशि में हो तो जातक के पांच पुत्र होते हैं। यदि सूर्य भी साथ में हो तो छः पुत्र होते हैं।
6. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति लग्न में एवं लग्नेश मंगल पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरों की संतान को अपने पुत्र तरह पालता है।
7. वृश्चिकलग्न में शनि बैठा हो, चौथे स्थान में पाप ग्रह एवं पंचम में चंद्रमा हो तो व्यक्ति को माता के शाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।
8. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हों तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
9. वृश्चिकलग्न हो, पंचमेश बृहस्पति कमजोर हो तथा राहु एकादश भाव में हो तो जातक के वृद्धावस्था में संतान होती है।
10. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।

11. वृश्चिकलग्न हो लग्नेश मंगल द्वितीय स्थान में तथा पंचमेश बृहस्पति पाप ग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो ऐसे जातक के पुत्र संतान नष्ट हो जाते हैं।

12. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु हो जाती है। जिसके कारण जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।

13. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रुप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

14. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति के साथ सप्तमेश शुक्र की युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रुप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

15. 4/10/12वें घर में पाप ग्रह हों तो मां-बाप दोनों मरें, मंगल, शनि राहु नवम या 11वें हों तो पिता मरे और दूसरें भाव में सूर्य, मंगल, बुध शनि मिल जायें व बृहस्पति प्रथम स्थान में हो तो पिता पुत्र के विवाह में ही मर जाए।

16. द्वितीय एवं तृतीय भाव में जितने ग्रह हों उतने छोटे भाई एवं 11/12 भाव में जितने ग्रह हों उतने ही बड़े भाई होते हैं।

17. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध क़न्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

18. पंचमेश बृहस्पति निर्बल हो, लग्नेश मंगल भी निर्बल हो तथा राहु पंचम भाव में हो तो जातक के सर्पदोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

19. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो **'पद्मनामक कालसर्प योग'** के कारण जातक के पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।

20. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

21. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो **'वंशविच्छेद योग'** बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़ियां नहीं चलती।

22. वृश्चिकलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो **'वंशविच्छेद योग'** बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।

23. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को **'इलाख्य नामक सर्पयोग'** बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

24. वृश्चिकलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ट या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'अनपत्य योग'** बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

25. पंचम भाव में मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं होती।

26. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हों, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो **'अनगर्भा योग'** बनता है। ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

27. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान मे हो तो **'अनगर्भा योग'** बनता है ऐसे स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

28. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो **'कुलवर्द्धन योग'** बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

29. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को **'केवल कन्या योग'** होता है। पुत्र संतान नहीं होती।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न और राजयोग

1. यदि लग्न अपने पूर्णांश पर स्वगृही मंगल से युक्त हो, शनि और सूर्य से युक्त तथा उच्च के बृहस्पति से दृष्ट हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. धन का बृहस्पति धन भाव में, मंगल पराक्रम स्थान में, कुंभ का शनि चतुर्थ स्थान में और उच्च का शुक्र पंचम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का मंगल तीसरे स्थान में, मीन का बृहस्पति पंचम भाव में, स्वगृही शुक्र वृष का सप्तम स्थान में, कर्क का चंद्रमा नवम और सिंह का सूर्य दशम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. मकर का शनि पराक्रम स्थान में, उच्च का बृहस्पति भाग्य स्थान में, उच्च का बुध लाभ स्थान में, वृश्चिक का मंगल लग्न में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. स्वगृही मंगल लग्न में, स्वगृही शनि चतुर्थ स्थान में, स्वगृही शुक्र सप्तम स्थान में, स्वगृही चंद्रमा नवम स्थान में और स्वगृही सूर्य दशम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. उच्च का मंगल तीसरे भाव में, उच्च का शुक्र पंचम स्थान में, उच्च का बृहस्पति नवम स्थान और उच्च का बुध एकादश स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. सूर्य, बुध तथा शुक्र तीनों सप्तम स्थान में वृष राशि में स्थित हों तो बुध की महादशा जातक के जीवन की श्रेष्ठतम दशा होगी तथा इस समय उसे यश, ख्याति, सम्मान व कीर्ति प्राप्त होगी।
8. सूर्य लग्न, चंद्र लग्न, लग्नेश तथा शुभ द्वितीय, पंचमेश, बृहस्पति सब की परस्पर युति या दृष्टि हो तथा जातक धनवान एवं उच्च पदाधिकारी होता है।

9. पाप ग्रहों से रहित बृहस्पति केन्द्र स्थान में हो वह जातक सम्मान पाने वाला, दान तथा गुण पात्रों से परीक्षित, कलाओं की खान, गान विद्या एवं नृत्य कुशल, मंत्रियों का अधिपति और राजसभा के विचारों को जानने वाला होता है।

10. वृश्चिकलग्न में दसम स्थान में बुध-सूर्य हो और मंगल व राहु छठे स्थान में हो तो इस राजयोग में उत्पन्न जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

11. वृश्चिकलग्न में दशम स्थान में बृहस्पति, बुध, शुक्र, चंद्रमा हो तो जातक का सब कार्य सिद्ध होता है और वह राजमान्य होता है।

12. वृश्चिकलग्न में द्वितीय स्थान में शुक्र, 10वें स्थान में बृहस्पति और छठें स्थान में राहु हो तो राजा पराक्रमी होता है।

13. कन्या में राहु, शुक्र, मंगल, शनि हों तो जातक कुबेर से भी अधिक धनवान होता है।

14. वृश्चिकलग्न में दशम स्थान में बुध सूर्य, छठे स्थान में राहु मंगल हो तो इस राजयोग में उत्पन्न व्यक्ति मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

15. वृश्चिकलग्न में लग्नेश तृतीय अथवा सप्तम स्थान में अपने मित्र से युत, मित्र के घर में हो तो जातक शत्रु रहित पृथ्वीपति होता है।

16. वृश्चिकलग्न में लग्न से चतुर्थ स्थान में शुक्र और दशम में मंगल व सूर्य शनैश्चर के साथ हों तो जातक निश्चित राजा होता है।

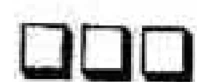
17. वृश्चिकलग्न में लग्न से पंचम, नवम, तृतीय घर में बृहस्पति चंद्रमा और सूर्य हो तो वह मनुष्य धन के विषय में कुबेर के समान होता है।

18. वृश्चिकलग्न में अपने घर में सूर्य, तुला में शुक्र और मिथुन में शनि हो तो राजयोग होता है।

19. वृश्चिकलग्न में त्रिकोण में बुध, बृहस्पति शुक्र हों और बुध व शनि क्रम से तीसरे छठे हों और सप्तम स्थान में पूर्ण बली चंद्रमा हो तो इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजा के समान होता है।

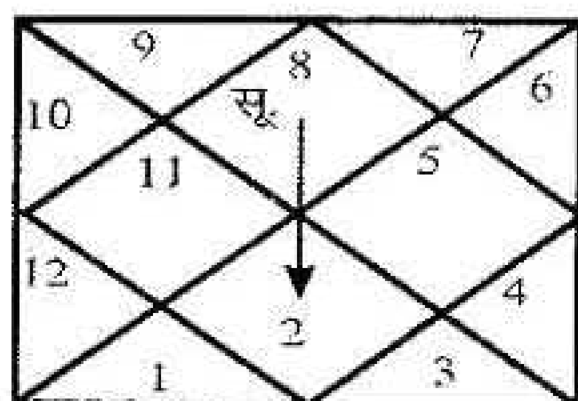
20. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति शुक्र और चंद्रमा ये तीनों मीन राशि के हों तो इस योग में जन्म लेने वाले को राज्य प्राप्ति होती है और उसकी पत्नी अनेक पुत्र वाली होती है।

21. वृश्चिकलग्न में राशियाधिपति नवम स्थान में हो और चंद्रमा लग्न में हो तो राजयोग होता है।



वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में



वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। यहां प्रथम भाव में सूर्य वृश्चिक राशि का होकर मित्रक्षेत्री है। सूर्य अपने स्थान (सिंह राशि) से चौथे एवं पितृ कारक स्थान नवमें भाव से पांचवे स्थान पर होकर शुभ फल देगा। जातक को पिता का सुख एवं पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक अदम्य साहसी व तेजस्वी होगा। जातक को नौकरी-व्यवसाय, राज्य से धन-वैभव व सम्मान की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि) पर है। ऐसे जातक को पेट का दर्द होगा। जातक के विवाह में अनावश्यक विलम्ब होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 1 के अनुसार दशमेश यदि लग्न में हो तो जातक में कवित्व शक्ति होगी।

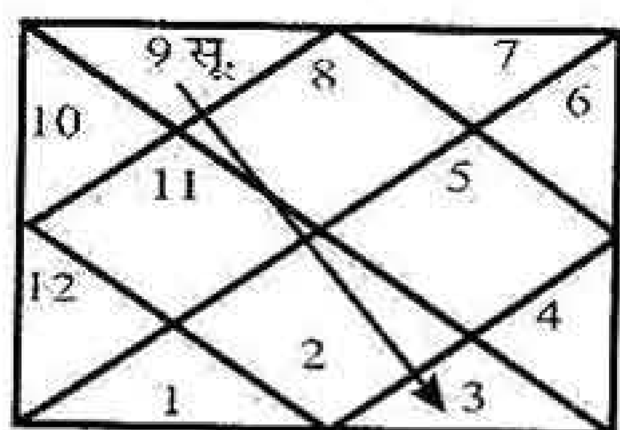
दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान वृश्चिक राशि में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को प्रात: सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति लग्न स्थान में होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। जातक स्वयं सुन्दर होगा, जातक की पत्नी भी अत्यधिक सुन्दर होगी।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा। उसका व्यक्तित्व आकर्षक होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। प्रथम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध केन्द्र में होने से **'कुलदीपक योग'** बनेगा। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान, राज्य में प्रभाव रखने वाला व्यक्ति होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा उसका भाग्योदय विवाह के बाद शीघ्र होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को आध्यात्मिक विद्या का रसिक बनायेगा। जातक तत्वदर्शी व उपदेशक होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक को सुन्दर व आकर्षक जीवनसाथी देगा। जातक का विवाह शीघ्र होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। शनि पराक्रमेश व सुखेश तथा सूर्य दशमेश होकर लग्न में बैठेगा। फलत: जातक महान पराक्रमी होगा तथा राज (सरकार) में उसका प्रभाव रहेगा। जातक का राजनैतिक वर्चस्व पिता की मृत्यु के बाद मुखरित होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। ऐसा जातक हठी, जिद्दी व लड़ाकू स्वभाव का होगा। जातक सरकारी कर्मचारियों से परेशान रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को उच्च महत्वाकांक्षी बनायेगा। जातक यशस्वी होगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। यहां द्वितीय स्थान में सूर्य धनु राशि का होकर मित्रक्षेत्री है। यह सूर्य धन प्रदाता है। जातक को विद्या, बुद्धि, मान-सम्मान, दैहिक सौन्दर्य की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक प्रखर वक्ता होता है। जातक को आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति होगी। जातक का आत्मबल मजबूत होता है।

दृष्टि–द्वितीयभावगत सूर्य की दृष्टि अष्टम स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। जातक दीर्घजीवी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 5 के अनुसार दशमेश यदि द्वितीय स्थान में हो तो जातक बड़ा स्पष्टवक्ता, सत्यभाषी एवं धर्मपरायण होता है।

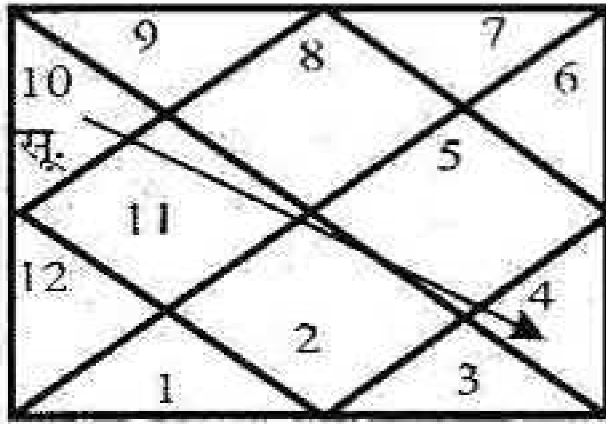
दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में धन की प्राप्ति होगी। जातक को रोजी-रोजगार के उत्तम अवसरों की प्राप्ति होगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान (धनु राशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति धन स्थान में होने से जातक धनवान होगा। जातक की वाणी अत्यधिक प्रभावशाली एवं विनम्र होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से जातक को परिश्रम का लाभ मिलता है। जातक अपने पुरुषार्थ से खूब धन कमाता है।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। द्वितीय स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। अष्टम स्थान बुध का स्वयं का घर है। फलतः जातक बुद्धिशाली एवं व्यापार प्रिय होगा। जातक व्यापार में काफी धन कमायेगा तथा उसकी आमदनी के जरिए दो-तीन प्रकार के होंगे। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक में रोग से लड़ने की शक्ति रहेगी एवं वह दीर्घजीवी होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति होने से जातक को **'राजमूल धनयोग'** के कारण सरकार से रुपया-सम्मान मिलेगा। सरकारी अधिकारी जातक की सेवा में रहेंगे।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से जातक धनवान होगा तथा उसकी वाणी रौबीली होगी।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्रक्षेत्री तो शनि सम क्षेत्री होगा। दशमेश होकर सूर्य एवं पराक्रमेश सुखेश होकर शनि के धन स्थान में बैठने से जातक धनी होगा। जातक पराक्रमी एवं दीर्घजीवी होगा। उसके मित्र बहुत होंगे, परन्तु जातक के सही पराक्रम का उदय उसके पिता की मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक को सरकारी आय से संतुष्टि नहीं होगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु धन संग्रह में बाधक रहेगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। यहां तृतीय स्थान में सूर्य मकर राशि का होकर शत्रुक्षेत्री है। ऐसा जातक साहसी, पराक्रमी, परिश्रमी एवं शूरवीर होता है। सूर्य अपने घर से छठे स्थान पर होने के कारण जातक को सरकारी नौकरी का योग कम होगा। जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। मित्रों से मनमुटाव रहेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि भाग्य भवन (कर्क राशि) पर होगी। ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। रोजी-रोजगार के अवसर सहज प्राप्त होंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 5 के अनुसार दशमेश यदि तृतीय स्थान में हो तो जातक बड़ा स्पष्टवक्ता, सत्यभाषी एवं धर्मपरायण होता है।

दशा–सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी।

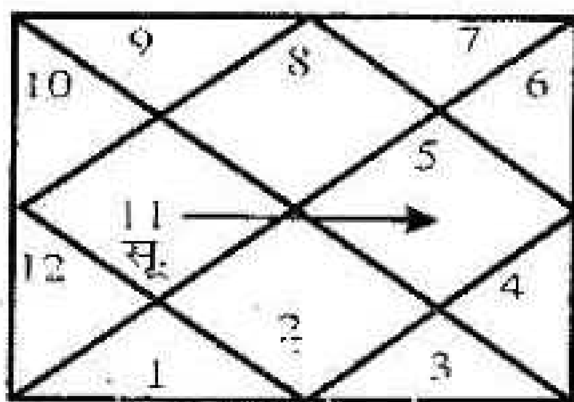
सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति पराक्रम स्थान में होने से जातक बहुत पराक्रमी होगा। जातक का भाई-बहनों के साथ अच्छा संबंध रहेगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा तथा पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ उच्च का मंगल जातक को महान पराक्रमी एवं यशस्वी बनायेगा। जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। तृतीय स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलत: जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एवं

महान व्यक्ति होगा। उसका भाग्योदय शीघ्र होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से धन लाभ दिलायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र पराक्रम में विवाद उत्पन्न करेगा। मित्रों में कलह होगी।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि स्वगृही होगा। दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश शनि की युति तृतीय भाव में होने से जातक जबरदस्त पराक्रमी एवं धनी व्यक्ति होगा। उसे जीवन में सभी प्रकार के भौतिक संसाधनों व सुखों की प्राप्ति होगी पर जातक को छोटे-बड़े भाईयों का सुख प्राप्त नहीं होगा। अन्य परिजनों से वैरभाव या कटुता रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक के बड़े भाई की अचानक मृत्यु होगी।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक को मित्रों से यश देगा। जातक कीर्तिवान् होगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में



वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। यहां चतुर्थ स्थान में सूर्य केनद्रगत होकर कुंभ राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य अपने स्थान से सातवें एवं पितृकारक स्थान नवम भाव से आठवें होगा। फलत: जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। जातक को भौतिक सुख-संसाधनों, धन-दौलत की प्राप्ति होगी। जातक का घर का मकान होगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत सूर्य की दृष्टि दशम भाव अपने ही घर सिंह राशि पर होगी। फलत: जातक को सरकारी-अर्धसरकारी नौकरी, ठेका या अनुदान राशि की प्राप्ति होगी।

निशानी—'बृहद्पाराशर होराशास्त्र' अध्याय 24/श्लोक 112 के अनुसार दशम भाव का स्वामी चौथे स्थान में हो तो जातक सुखी, माता का भक्त, सवारी, भूमि व धन सुख से परिपूर्ण होता है।

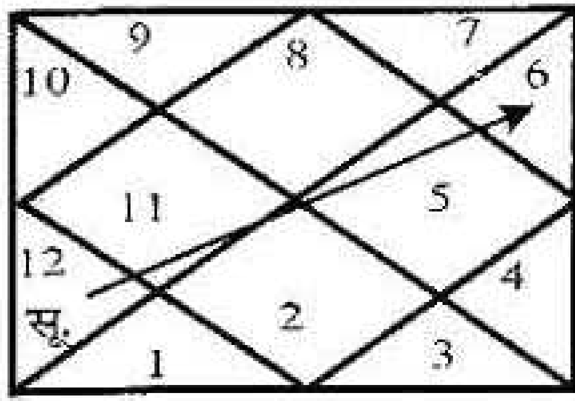
दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि) में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को मध्यरात्रि 12 बजे के आस-पास होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति चतुर्थ भाव में होने से जातक को अच्छी नौकरी व पिता का सहयोग मिलेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ केन्द्रस्थ मंगल जातक को माता-पिता का सुख दिलायेगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। चतुर्थ स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि राज्य स्थान (दशम भाव) पर रहेगी। फलतः जातक बुद्धिमान एवं माता-पिता के सुख से युक्त होगा। जातक को मां की सम्पत्ति मिलेगी, इसके लिए चंद्रमा की स्थिति भी देखनी होगी पर वाहन सुख, उत्तम मकान का सुख जातक को अवश्य मिलेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ केन्द्रस्थ बृहस्पति जातक को धनी एवं पूर्ण सुखी व्यक्तित्व देगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से जातक को राजकीय सम्मान मिलेगा। जातक के पास खुद का मकान होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहा दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि मूलत्रिकोण राशि में होगा। शनि के कारण यहां **'शशयोग'** बनेगा। ऐसा व्यक्ति निश्चित रुप से राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा। पिता की मृत्यु के बाद राजनीति में जातक का वर्चस्व बढ़ेगा। सुखेश व राज्येश की युति यहां जातक के व्यक्तिगत जीवन के लिए शुभ परन्तु उसकी माता के नितान्त अशुभ है।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक के माता-पिता की मृत्यु बाल्यावस्था में होगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में

वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अतः यहां शुभ फल ही देगा। सूर्य यहां पंचम स्थान में मीन (मित्र)



राशि में है। सूर्य यहां अपने घर (सिंह राशि) से आठवें एवं पितृ कारक भाव नवम भाव से नवम स्थान पर है। जातक को पिता का सुख मिलेगा। ऐसे जातक को शिक्षा एवं प्रशासन में उच्च पद की प्राप्ति होगी। जातक विद्या, बुद्धि एवं तर्कशक्ति से युक्त होगा। जातक को एक पुत्र का पूर्ण सुख मिलेगा।

दृष्टि–पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि एकादश भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक को व्यापार में लाभ होगा। उसे बड़े भाई का सुख मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 2 के अनुसार दशमेश यदि पंचम भाव में हो तो जातक सदैव प्रसन्न रहने वाला, धनवान, पुत्रवान एवं सम्पूर्ण सुखी होता है।

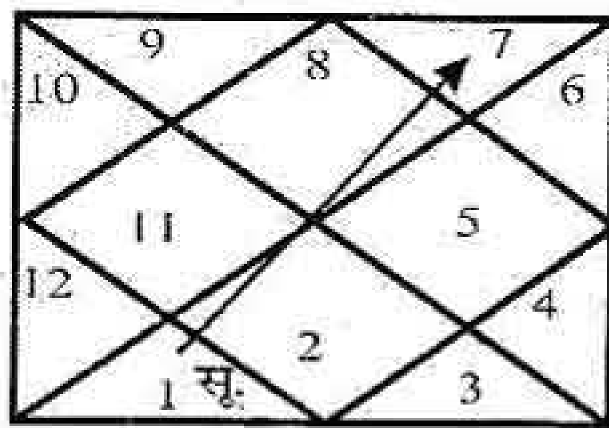
दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति पंचम स्थान (मीन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति पंचम भाव में होने से जातक को उत्तम संतति एवं विद्या का सुख मिलेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक ज्ञान देगा। जातक के चार पुत्र होंगे।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। पंचम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिशाली एवं शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक को पुत्र व कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक ज्योतिष, तंत्र व गूढ़ रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा। जातक धनवान होगा एवं समाज के लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तियों में अग्रगण्य होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति स्वगृही होने से **'राजमूल धनयोग'** बना। जातक को उच्च सरकारी नौकरी, राजकीय सम्मान व प्रतिष्ठा मिलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ उच्च का शुक्र जातक को धनवान ससुराल देगा। जातक को पत्नी से आर्थिक लाभ होगा। विवाह के बाद जातक का भाग्य चमकेगा।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्रक्षेत्री तो शनि सम राशि में होगा। दशमेश सूर्य व सुखेश शनि पंचम भाव में होने से जातक विद्यावान होगा। शैक्षणिक उपाधि के साथ उसे अनुभवों का बड़ा गहन व गम्भीर ज्ञान होगा परन्तु विद्या अधूरी रहेगी। संतान सुख में भी कन्या संतति को लेकर जातक को विशेष चिंता रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। फलतः विद्या में बाधा एवं पुत्र संतान में रुकावट होगी। अल्प संतति होगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु गर्भपात करायेगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अतः यहां शुभ फल ही देगा। छठे स्थान में सूर्य मेष राशि में उच्च का है। मेष राशि के दस अंशों तक सूर्य परमोच्च का कहलाता है। सूर्य अपने स्थान से नवम एवं पितृकारक भाव में दशम स्थान पर है। सूर्य की यह स्थिति '**राजभंग योग**' बना रही है। ऐसे जातक को जीवन में संघर्ष के उपरान्त विजय मिलती है। जातक के प्रतिस्पर्धी बहुत होते हैं। इससे जातक घबराता नहीं अपितु जातक अपनी आक्रामक नीति से शत्रुओं का परास्त करता है। ऐसे जातक जन्मजात योद्धा होते हैं।

दृष्टि–षष्ट भावगत सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक वाचाल एवं वाक्पटु होता है पर जातक सरकारी अधिकारियों से पीड़ित रहता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 3 के अनुसार दशमेश यदि छठे स्थान में हों तो मनुष्य अपने शत्रुओं से दुःख पाता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (मेष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 से 8 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दसमेश सूर्य की युति छठे भाव में होने से '**भाग्यभंग योग**' व '**राजभंग योग**' बनेगा। जातक को अच्छी नौकरी प्राप्त करने व भाग्योदय हेतु बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। छठे स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली व धनवान होगा परन्तु सूर्य छठे जाने से '**राज्यभंग योग**' तथा बुध छठे जाने से '**लाभभंग योग**' बना। अत: जातक को व्यापार से धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। सरकारी नौकरी के अवसर कम मिलेंगे अथवा सरकार द्वारा मिलने वाला लाभ अटक जायेगा। अष्टमेश का छठे जाने से '**सरल योग**' बनेगा। जातक दीर्घजीवी होगा एवं समाज का अग्रगण्य, लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' व '**संतानहीन योग**' बनेगा। जातक को धन व संतति संबंधी चिंता रहेगी।

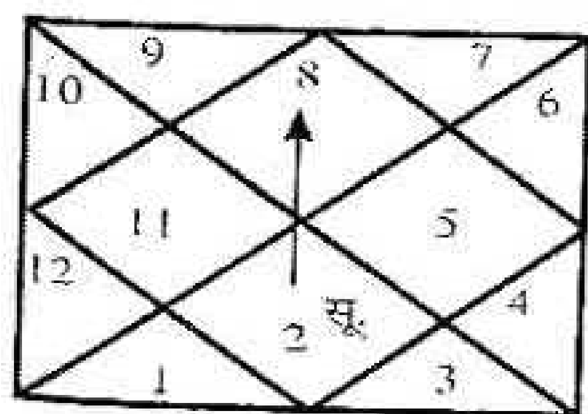
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक धनी तो होगा पर दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगा।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्रक्षेत्री होकर उच्च का होगा तो शनि शत्रुक्षेत्री होगा। राज्येश सूर्य व सुखेश शनि की इस युति से '**राजभंग योग**', '**पराक्रमभंग योग**', '**सुखभंग योग**' के साथ-साथ '**नीचभंग राजयोग**' की स्थिति बनेगी। फलत जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली व धनी होगा, परन्तु समाज में उसकी कीर्ति नहीं होगी। जातक की पीठ पीछे उसकी निन्दा बहुत होगी।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को गुप्त रोग होगा। जातक को गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को पैरों में बीमारी देगा। पेट के नीचे के अंगों में शल्य चिकित्सा संभव है।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में



वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। सूर्य यहां सप्तम स्थान में वृष (शत्रु) राशि में है। सूर्य अपने घर से दसवें एवं पितृकारक भाव से ग्यारहवें स्थान पर है। ऐसा

जातक महत्वाकांक्षी एवं स्वतंत्र विचारों वाला होता है। जिससे उसका अपनी पत्नी के टकराव होता रहता है। कई बार पिता से भी विचार नहीं मिलते। फिर भी ऐसे जातक व्यवहार कुशल, कठोर परिश्रमी एवं खुशमिजाज होते हैं। राजकाज व राजनीति में जातक का प्रभाव होता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसे जातक को परिश्रम का मीठा फल अवश्य मिलता है गृहस्थ सुख उत्तम होता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 5 के अनुसार दशमेश यदि सातवें स्थान में हो तो जातक स्पष्टवक्ता, सत्यवादी एवं धर्मपरायण होता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी। गृहस्थ सुख बढ़ेगा। सरकारी अधिकारी मददगार साबित होंगे।

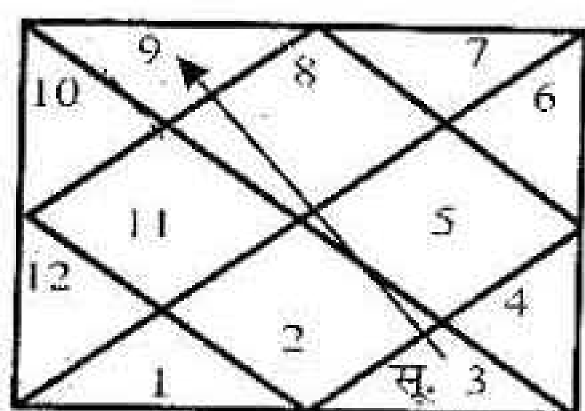
सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति सातवें स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की युति सप्तम भाव में होने से जातक की पत्नी अत्यन्त रुपवती होगी। उसे परिश्रम का लाभ मिलेगा। '**यामिनीनाथ योग**' के कारण जातक भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक के गृहस्थ सुख में कमी करायेगा। जातक की धर्मपत्नी क्रोधी स्वभाव की होगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। सातवें स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान व धनवान होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक को अल्प प्रयत्न से बहु-लाभ होगा। ऐसा जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा। बुध केन्द्रवर्ती होने के कारण '**कुलदीपक योग**' बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नामक दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति गृहस्थ सुख में वृद्धि करायेगा। जातक को राजा से सम्मान मिलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान् होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि मित्रक्षेत्री होगा। दशमेश सूर्य व पराक्रमेश, सुखेश शनि सप्तम भाव में होने

के कारण जातक का गृहस्थ व संतान सुख उत्तम होगा। जातक स्वयं पराक्रमी तथा उसका ससुराल भी पराक्रमी, प्रभावशाली होगा, परन्तु पति-पत्नी में कलह चरम सीमा पर होती रहेगी। पिता की मृत्यु के बाद घर में सुख-शांति का साम्राज्य होगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा जो जातक के गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक का जीवनसाथी के साथ बिछोह संभव है।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु विवाह में विवाद करायेगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। अष्टम स्थान में सूर्य मिथुन (सम) राशि में होगा। सूर्य अपने घर से ग्यारहवें एवं पितृ कारक भाव से बारहवें स्थान पर होगा। सूर्य की यह स्थिति '**राजभंग योग**' बना रही है। ऐसे जातक को धन-यश, पद-प्रतिष्ठा, विद्या, मान-सम्मान की प्राप्ति में रुकावटें आयेंगी। जातक को पिता का सुख कमजोर होगा। जातक का आत्मबल भी कमजोर रहेगा।

दृष्टि–अष्टम स्थानगत सूर्य की दृष्टि धन स्थान (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक का धन अव्यर्थ कार्यों में खर्च होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 3 के अनुसार दशमेश यदि अष्टम स्थान में हो तो व्यक्ति अपने शत्रुओं से दु:खी रहता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति आठवें स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति आठवें भाव में होने से '**भाग्यभंग योग**' व '**राजभंग योग**' बनेगा। जातक को उत्तम व्यवसाय, नौकरी प्राप्त हेतु, भाग्योदय हेतु अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश है। आठवें स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य आठवें होने से '**राजभंग योग**' तथा बुध आठवें होने से '**लाभभंग योग**' बना परन्तु अष्टम स्थान में स्वगृही होने से '**सरल योग**' बना। फलत: यह योग यहां मिले-जुले फल देगा। जातक बुद्धिमान व धनवान होगा। '**सरल योग**' के कारण जातक दीर्घजीवी होगा परन्तु भाग्योदय हेतु उसे संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक चिंता एवं संतान संबंधी चिंता भी रहेगी।

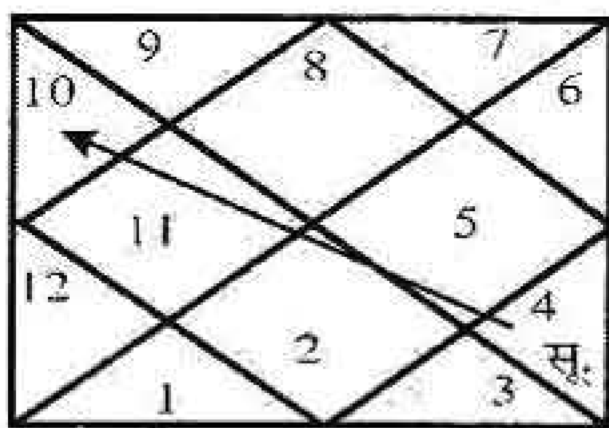
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक को दाम्पत्य सुख में कमी आयेगी।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। सूर्य यहां सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। राज्येश सूर्य व सुखेश शनि की इस युति से क्रमश: '**राजभंग योग**', '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखभंग योग**' की सृष्टि होगी। फलत: ऐसे जातक की यश-कीर्ति भंग होगी एवं उसके मित्र दगा देंगे। सरकारी नौकरी में रुकावट के साथ, जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक के साथ अचानक दुर्घटना हो सकती है।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को गुप्त रोग एवं परेशानियां देगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में



वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। सूर्य यहां नवम स्थान में कर्क(मित्र) राशि का है। सूर्य अपने घर से बारहवें स्थान पर है। अत: जातक अपने पिता व परिजनों से ज्यादा प्रेम न रखकर समझौतावादी दृष्टिकोण अपनायेगा। जातक भाग्यशाली होगा। उसको सरकारी नौकरी, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान की प्राप्ति सहज में होगी।

दृष्टि–नवम स्थान में स्थित सूर्य की दृष्टि पराक्रम भाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। उसके मित्र बहुत होंगे। जातक का जनसम्पर्क तेज होगा।

निशानी–'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' अध्याय 10/श्लोक 117 के अनुसार दशमेश यदि भाग्यभवन में हो तो जातक भाग्यवान, गुणी सहोदरों के सुख से युक्त परम तेजस्वी होता है।

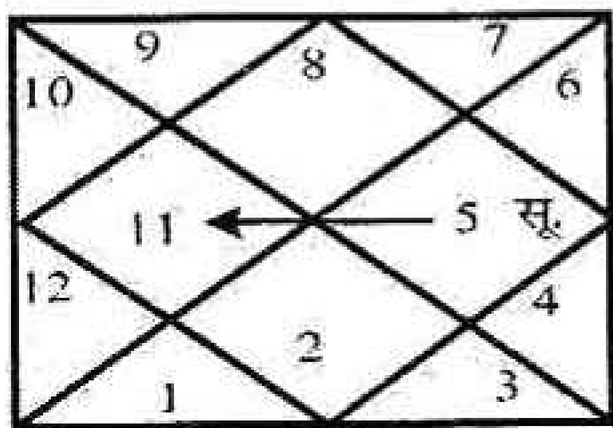
दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य नवम स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति भाग्य स्थान में होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक परम भाग्यशाली होगा। उसको नौकरी-व्यवसाय की उत्तम प्राप्ति होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ नीच का मंगल, जातक को महान् पराक्रमी बनायेगा। जातक के भाईयों में प्रेम रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। नवम स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान व भाग्यशाली होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को परिजनों, मित्रों की मदद समय-समय पर मिलती रहेगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति उच्च का होगा। ऐसे जातक को राजा से सम्मान तथा भाईयों से लाभ मिलेगा। जातक महान् पराक्रमी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र विवाह से सुख-शांति एवं समृद्धि देगा। जातक को पिता का सुख मिलेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश, सुखेश शनि की युति भाग्य स्थान में होने से जातक को सरकारी नौकरी, राज्य कृपा या राजकीय सम्मान वगैरह मिलेगा। जातक व्यवसाय की दृष्टि से उन्नत होगा परन्तु उसकी अपने भाईयों से नहीं बनेगी। सुख प्राप्ति के संसाधनों हेतु जातक निरन्तर परेशान रहेगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक को पिता के सुख में कमी होगी। जातक के पिता की मृत्यु उसकी बाल्यवस्था में होगी।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगा। जातक की महत्वाकांक्षाएं पूरी होगी।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में



वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। सूर्य यहां दशम स्थान में स्वगृही होकर '**रविकृत राजयोग**' देगा। जातक को माता-पिता का सुख, धन-दौलत, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। बहुत संभव है जातक को राजनीति में लालबत्ती वाली गाड़ी प्राप्त हो। जातक का आत्मबल तेज होगा। इष्ट-फल उत्तम होगा। जातक पर ईश्वरीय कृपा रहेगी।

दृष्टि–दशमस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) पर है। जातक को मकान का सुख मिलेगा।

निशानी–'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' अध्याय 24/श्लोक 118 के अनुसार जातक राजकुल में उत्पन्न राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में नौकरी लगेगी एवं राजबल प्राप्त होगा।

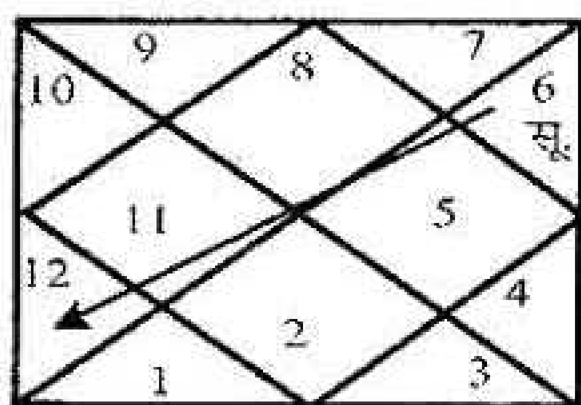
सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दशम स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या की दोपहर 12 बजे के आस-पास होगा। भाग्येश चंद्र व दसमेश सूर्य की यह युति दशम भाव में होने से जातक को '**रविकृत राजयोग**' का लाभ मिलेगा। जातक को सरकारी घर-प्रतिष्ठा मिलेगी। जातक को उत्तम भवन, उत्तम वाहन का सुख मिलेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल 'दिक्बली' होकर '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। जातक को राजा से सम्मान, सहयोग मिलेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। दशम स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा तथा '**रविकृत राजयोग**' की सृष्टि करेगा। बुध के कारण '**कुलदीपक योग**' बना। बहुत उच्चाभिलाषी होने से जातक महत्वाकांक्षी होगा। फलत: ऐसा जातक बुद्धि बल से धन कमाने

वाला, राज्य (सरकार) में ऊंचा पद, प्रतिष्ठा पाने वाला, घर का दो मंजिला मकान एक से अधिक वाहनों का स्वामी होगा। जातक का पराक्रम तेज होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति होने से जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी तथा विद्या एवं संतान से धन लाभ होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र राजनीति में संघर्ष का द्योतक है।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही तो शनि परम शत्रु राशि में होगा। सूर्य के कारण यहां **रविकृत राजयोग** बनेगा। दशमेश व सुखेश, पराक्रमेश की युति दशम भाव में होने से जातक को रोजी-रोजगार के उन्नत अवसर प्राप्त होंगे परन्तु माता का सुख प्राप्त नहीं होगा। जातक का मकान या वाहन पुराना होगा, उस पर मरम्मत को लेकर बहुत खर्चा करना पड़ेगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। सरकारी नौकरी में बाधा होगी। सरकारी सुख में बाधा बनी रहेगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को राजा से सम्मान दिलायेगा। जातक महत्वाकांक्षी होगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में



वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। यहां एकादश भावगत सूर्य कन्या (सम) राशि में है। सूर्य अपनी राशि में दूसरे एवं पितृ कारक भाव से तीसरे स्थान पर है। ऐसे जातक को पिता का सुख उत्तम होता है। जातक को राजा का सुख उत्तम व सरकारी नौकरी, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, धन-दौलत की प्राप्ति होगी। जातक का अपने परिजनों-रिश्तेदारों के प्रति अदम्य-उत्साह व अनुराग होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (मीन राशि) पर है। ऐसे जातक को श्रेष्ठ विद्या सुख एवं पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 2 के अनुसार दशमेश यदि एकादश भाव में हो तो जातक सदैव प्रसन्न रहने वाला, धनवान, पुत्रवान एवं सम्पूर्ण सुखी होगा।

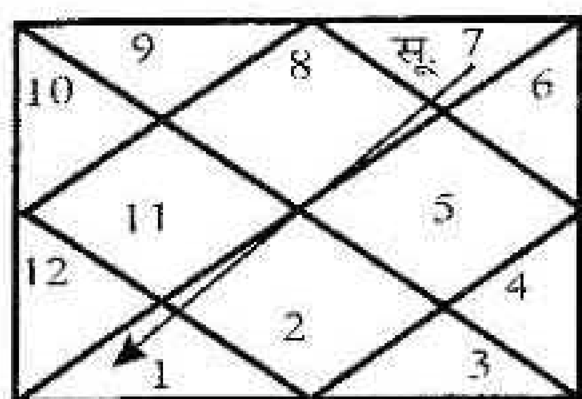
दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रात: 10 से 12 बजे के मध्य होगा। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति एकादश भाव में होने से जातक को उत्तम विद्या, उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। जातक व्यापार-व्यवसाय से अच्छा धन कमायेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक को भाईयों से लाभ मिलेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। एकादश स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर बुध उच्च का होगा। दशमेश एवं बलवान लाभेश की यह युति राजयोग कारक है। जातक बुद्धिमान एवं महा–धनवान व्यक्ति होगा। जातक उद्योगपति होगा एवं भाग्यशाली होगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। ऐसा जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति होने से जातक को पुत्र संतति का लाभ मिलेगा। जातक को उत्तम विद्या का लाभ मिलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र व्यापार में उतार-चढ़ाव लायेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। सूर्य यहां समराशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश, सुखेश शनि की युति यहां एकादश स्थान में होने से जातक विद्यावान होगा तथा तंत्र-मंत्र एवं गुप्त विद्याओं का जानकार होगा, परन्तु जातक को सरकारी नौकरी में दिक्कतें आयेंगी। जातक को निजी व्यापार-व्यवसाय में भी परेशानी उठानी पड़ेगी। पिता गुजरने के बाद ही जातक का रोजगार अर्थात् आमदनी सुदृढ़ होगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को व्यापार में नुकसान व परेशानी आयेगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को उच्च महत्वाकांक्षी बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। द्वादश स्थानगत सूर्य तुला राशि में



नीच का है। तुला राशि के दस अंशों में सूर्य परम नीच का होगा। सूर्य यहां अपने घर में तीसरे स्थान एवं पितृकारक भाव में चौथे स्थान पर है। सूर्य की इस स्थिति से **'राजभंग योग'** बना। जातक के एक हजार राजयोग नष्ट होते हैं। उसकी सरकारी नौकरी नहीं लगती। जातक को पिता-व्यवसाय, सम्मान व पद-प्रतिष्त की प्राप्ति में बाधा आयेगी। जातक को नेत्र पीड़ा होगी।

दृष्टि–द्वादश भावगत सूर्य की दृष्टि छठे भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु होंगे पर जातक उनको नष्ट करने में सक्षम होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 3 के अनुसार दशमेश यदि द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति अपने शत्रुओं से पीड़ित रहता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (तुला राशि) के होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 से 10 बजे के मध्य होगा। भाग्येश चंद्र और दशमेश सूर्य की यह युति बारहवें स्थान में होने के कारण **'भाग्यभंग योग'** एवं **'राज्यभंग योग'** बनेगा। ऐसे जातक को राजकीय नौकरी नहीं मिलेगी। जातक को उत्तम नौकरी, व्यापार की प्राप्ति हेतु दिक्कतें आयेगी। जातक को नेत्र पीड़ा होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। द्वादश स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर सूर्य नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य के बारहवें जाने से **'राजभंग योग'** बनोगा तथा बुध बारहवें होने से **'लग्नभंग योग'** बनेगा। अष्टमेश के बारहवें जाने से **'सरल योग'** भी बनता है। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। **'सरल योग'** के कारण वह दीर्घजीवी होगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठि एवं गणमान्य व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। ऐसे जातक को आर्थिक दिक्कतों एवं संतान संबंधी परेशानियां रहेंगी।

5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र 'विवाहभंग योग' बनायेगा। जातक को दाम्पत्य सुख विलम्ब से मिलेगा।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। सूर्य यहां नीच राशि का तो शनि उच्च राशि का होकर '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। साथ ही '**राजभंग योग**', '**पराक्रम भंगयोग**' एवं '**सुखभंग योग**' की सृष्टि हुई। फलत: जातक राजा तुल्य पराक्रमी व ऐश्वर्य सम्पन्न तो होगा। परन्तु समाज में उसकी कीर्ति नहीं होगी। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे, जिन्हें परास्त करने में जातक सफल होगा परन्तु इसके लिए उसे परिश्रम बहुत करना पड़ेगा।

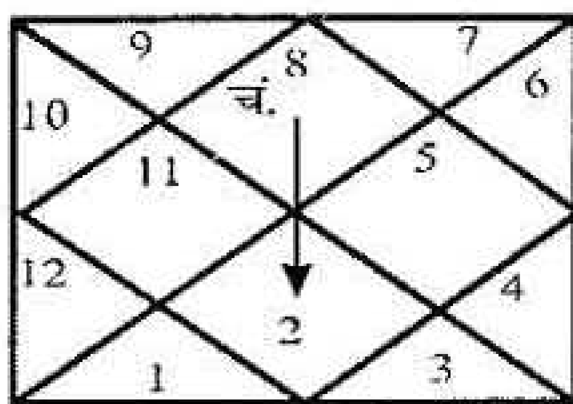
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को नेत्र पीड़ा होगी। जातक को सरकारी दण्ड मिलेगा।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को परदेश में लाभ देगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में



वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां प्रथम स्थान में चंद्रमा नीच का है। वृश्चिक राशि के तीन अंशों तक चंद्रमा परम नीच का होगा। ऐसे जातक में कवित्व शक्ति परिपूर्ण होती है। जातक में कल्पना शक्ति तीव्र होती है। जातक धनवान किन्तु थोड़ा ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है। जातक भाग्यशाली होगा। ऐसे जातक को कला, लेखन, अभिनय एवं सामाजिक कार्यो में सम्मान मिलता है।

दृष्टि–लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 4 के अनुसार 24 वर्ष की आयु के बाद जातक के पास दिनों-दिन धन बढ़ता है और वह मनुष्य सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान वृश्चिक राशि में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को प्रात: सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति लग्न स्थान में होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। जातक स्वयं सुन्दर होगा तथा उसकी पत्नी भी अत्यधिक सुन्दर होगी।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां प्रथम स्थान मे दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। जहां मंगल स्वगृही होगा तथा चंद्रमा नीच राशि का होने से '**नीचभंग राजयोग** बनेगा। मंगल के कारण '**रुचक योग**' भी बनेगा। फलतः यहां '**महालक्ष्मी योग**' भलीभांति मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मकर राशि), सप्तम स्थान (मेष राशि) एवं अष्टम स्थान (वृष राशि) पर होगी। ये सभी राशियां इन ग्रहों की स्व एवं उच्च राशियां हैं। फलतः ऐसा जातक महाधनी होगा विवाह के बाद धनी होगा। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का मान-मर्दन करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक के पास उत्तम वाहन, भवन एवं सुख-सुविधाएं होंगी।

3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध होने से ऐसा जातक प्रत्येक बात पर दो बार सोचेगा। जातक विद्यवान बुद्धिमान होगा परन्तु मानसिक अंतर्द्वन्द बना रहेगा।

4. **चंद्र+गुरु**–वृश्चिकलग्न के प्रथम भाव मे यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है जो पूर्णतः शुभ फलदायक है। चंद्रमा यहां नीच का होगा। पर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव, सप्तम भाव एवं नवम भाव पर होगी। फलतः जातक विद्यावान होगी। जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक की गिनती सफल एवं भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी।

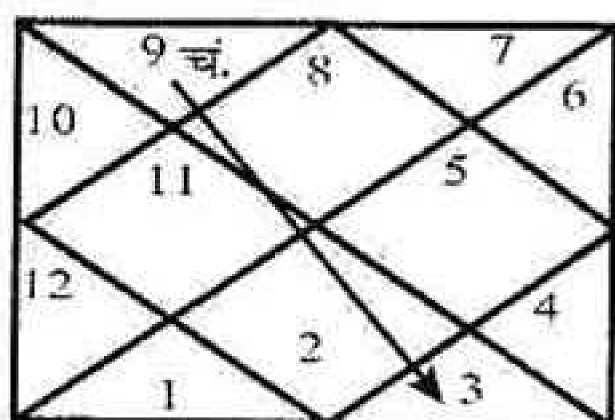
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र जातक को आकर्षक शरीर व चेहरा देगा। जातक की पत्नी भी सुन्दर होगी।

6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं एवं सम्पन्नता देगा।

7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक उद्विग्न रहेगा तथा मानसिक तानव में रहेगा।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु व्यक्ति को महत्वाकांक्षी बनायेगा। ऐसा जातक संघर्ष के साथ आगे बढ़ेगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां द्वितीय स्थान में चंद्रमा धनु (सम) राशि में है। ऐसे जातक को धन व कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। जातक

विनम्र एवं मिष्टभाषी होता है। चंद्रमा यहां अपनी राशि (कर्क) से छठे स्थान में होने से ज्यादा शुभ नहीं है। जातक को भाग्योदय हेतु थोड़ा परिश्रम करना पड़ेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। ऐसे जातक के गुप्त शत्रु होते हैं पर जातक दीर्घजीवी होता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 6 के अनुसार ऐसा जातक धनवान, गुणवान, अपने विषय का विद्वान, मनुष्यों को प्रिय, बड़ा ऑफिसर एवं मनुष्यों पर शासन करने वाला होता है।

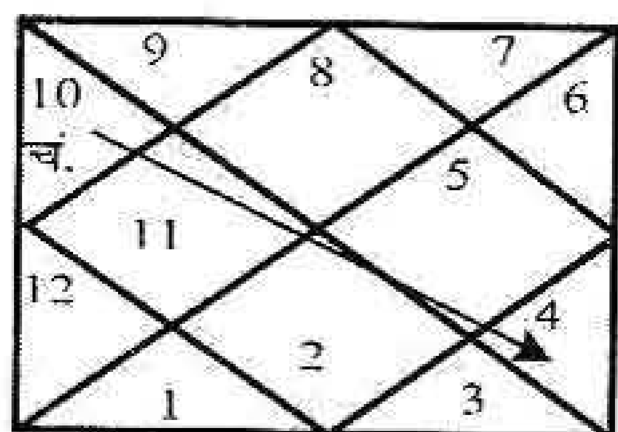
दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक का भाग्योदय होगा। जातक को चंद्रमा की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान (धनु राशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति धन स्थान में होने से जातक धनवान होगा। जातक की वाणी अत्यधिक प्रभावशाली एवं विनम्र होगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव (मीन राशि), अष्टम भाव (मिथुन राशि) एवं भाग्य भवन (कर्क राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनी एवं सौभाग्यशाली होगा। अपने जातक शत्रुओं का मान-मर्दन करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के प्रजनन के बाद होगी।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध जातक को व्यापार-व्यवसाय से खूब लाभ दिलायेगा। जातक की वाणी विनम्र एवं उसका स्वभाव सौम्य होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–वृश्चिकलग्न में धनु राशि के अंतर्गत द्वितीय भाव में हो रही यह युति, वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा इसकी दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थान एवं राज्य (दसवें) स्थान पर होगी। फलतः आप ऋण-रोग एवं शत्रु से बचे रहेंगे। आपका भाग्योदय शीघ्र होगा। आपको उच्च शैक्षणिक डिग्री भी प्राप्त होगी तथा आपकी आयु भी लंबी होगी। यह योग आपके लिए अत्यंत शुभ फलदायक है।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र व्यक्ति को सुसंस्कृत एवं सभ्य वाणी देगा। जातक धनी होगा तथा उसे अचानक पैसा मिलेगा।

6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि होने से जातक भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, धनी, मानी एवं पराक्रमी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताएं बनी रहेंगी।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु की युति धनहानि में सहायक होती है।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश हैं। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां तृतीय स्थान में चंद्रमा मकर (सम) राशि में है। ऐसे जातक को माता-पिता का सुख, भाई-बहन का सुख, जमीन-जायदाद का सुख, पद-प्रतिष्ठा, सामाजिक व राजनैतिक सम्मान मिलेगा। चंद्रमा अपनी राशि (कर्क) से सातवें स्थान पर होने से पत्नी का सुख, गृहस्थ का सुख उत्तम रहेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य भवन अपने ही घर (कर्क राशि) पर होगी। ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होता है। जातक के मित्र उसके जीवन में मददगार साबित होंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 6 के अनुसार ऐसा जातक धनवान, गुणवान अपने विषय का विद्वान, मनुष्यों को प्रिय, बड़ा ऑफिसर एवं मनुष्यों पर शासन करने वाला होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

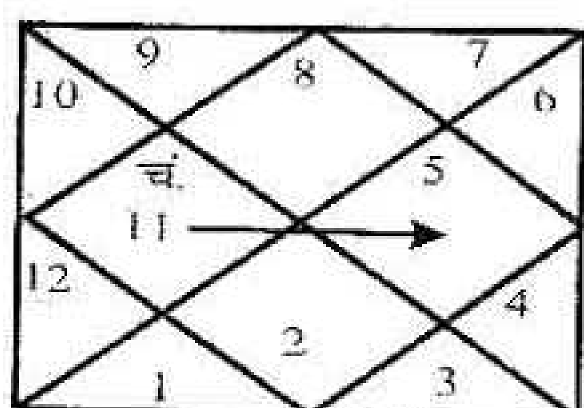
चंद्रमा की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति पराक्रम स्थान में होने से जातक बहुत पराक्रमी होगा। जातक का भाई-बहनों के साथ अच्छा संबंध रहेगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा तथा पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर राशि में मंगल उच्च का होगा। फलतः यहां '**महालक्ष्मी योग**' मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि षष्टमभाव (मेष राशि), भाग्यभवन (कर्क राशि)

एवं दशम भाव (सिंह राशि) पर होगी फलत: जातक धनी होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक भाग्यशाली एवं महान् पराक्रमी होगा। जातक का सशक्त प्रभाव देश की राजनीति में भी होगा।

3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध जातक को अधिक बहनें देगा। जातक पराक्रमी होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–वृश्चिकलग्न के तृतीय भाव में मकर राशि में बृहस्पति+चंद्र की युति हो रही है। यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। तृतीय स्थान में बृहस्पति नीच का होगा। इसकी दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थान एवं दशम भाव पर होगी। फलत: जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। आपकी आयु दीर्घ होगी तथा आप अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम रहेंगे। राज्य (सरकार), कोर्ट-कचहरी में भी जातक को विजय मिलेगी। जातक की गिनती योग्य एवं सफल व्यक्तियों में होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र होने से जातक का ससुराल पराक्रमी होगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि स्वगृही होने से जातक को भाई-बहनों का पूर्ण सुख मिलेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बना रहा है। अत: जातक भाईयों की ओर से चिंतित रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक कीर्तिवन्त होगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में



वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां चतुर्थ स्थान में चंद्रमा कुंभ (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को माता-पिता का सुख, वाहन का सुख, जमीन, जायदाद व पैतृक सम्पत्ति का सुख मिलता है। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक धैर्यशाली, संयमी एवं अतिथिप्रिय होता है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसे जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति शीघ्र होता है। जातक का भाग्य उन्नत होता है।

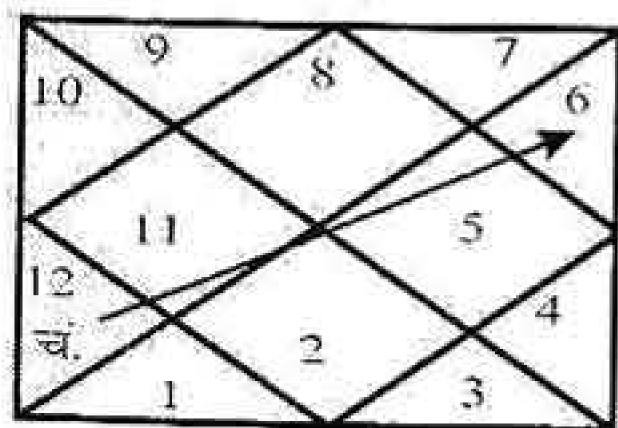
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 2 के अनुसार भाग्येश यदि चतुर्थ स्थान में हो तो जातक राज्यमंत्री, सेनापति अथवा शासन का प्रमुख व्यक्ति होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। एवं उसका भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि) में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 12 बजे के आस-पास होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति चतुर्थ भाव में होने से जातक को अच्छी नौकरी व पिता का सहयोग मिलेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों कुंभ राशि में होंगे। मंगल यहां **'दिक्बली'** होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को देखेंगे। फलतः जातक धनी होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में अच्छा धन कमायेगा। ऐसा जातक विवाह के बाद आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक ऊंचाइयों को स्पर्श करेगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध जातक को विद्यावान् बनायेगा। जातक को माता-पिता का सुख प्राप्त होगा।
4. **चंद्र+बृहस्पति**–वृश्चिकलग्न में चतुर्थ भावगत यह युति कुंभ राशि में हो रही है। यह वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। चतुर्थ भाव में ये दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होकर अष्टम स्थान, दशम भाव एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक दीर्घायु होगा। उसका दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। राज्यपक्ष (कोर्ट-कचहरी) में विजय मिलेगी। जातक के हाथ से शुभ कार्य में धन खर्च होगा। जिससे जातक को यश मिलेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। जातक महाधनी होगा। उसके पास उत्तम वाहन एवं भवन होगा। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक मानसिक परेशानी में रहेगा। जातक को माता का सुख कमजोर होगा।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में



वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां पंचम स्थान में चंद्रमा मीन (सम) राशि में है। चंद्रमा अपने घर से दसवें एवं मातृकारक तरीके मातृ भाव से दूसरे

स्थान पर होगा। जातक को माता का सुख मिलेगा। जातक अत्यधिक भावुक, कल्पनाशील होता है। जातक विद्यावान् होगा। उसे शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक को संतति लाभ भी होगा। परन्तु प्रथम संतति कन्या होने की संभावना अधिक रहेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लाभ स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक को व्यापार में लाभ होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 3 के अनुसार भाग्येश यदि पांचवें स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली, जनप्रिय, बृहस्पतिभक्त, धैर्यवान् एवं अनेक सद्गुणों से युक्त होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में व्यापार-व्यवसाय बढ़ेगा। दूरस्थ प्रदेशों की यात्रा होगी। परिवार सहित तीर्थ-यात्रा भी संभव है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

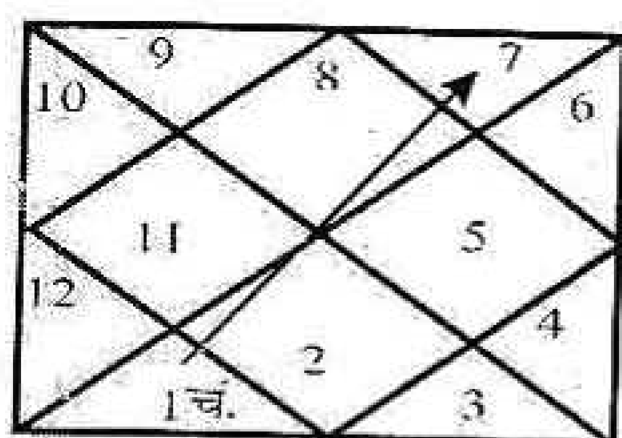
1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति पंचम स्थान (मीन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति पंचम भाव में होने से जातक को उत्तम संतति एवं विद्या का सुख मिलेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि), लाभ स्थान (कन्या राशि) एवं व्यय भाव (तुला राशि) पर होगी। इस '**लक्ष्मी योग**' के कारण जातक धनवान होगा। जातक लम्बी उम्र वाला होगा तथा व्यापार-व्यवसाय व नौकरी से यथेष्ट धन अर्जित करेगा। साथ ही जातक व्ययशील प्रवृति, खर्चीले स्वभाव का परोपकारी व दानी होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध नीच का होने से जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। विद्या से किस्मत बदलेगी।
4. **चंद्र+गुरु**–वृश्चिकलग्न के पंचम भाव में यह युति मीनराशि में हो रही है। यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। यह शुभ फलकारी है। क्योंकि बृहस्पति यहां स्वगृही होकर भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को देख रहा है। फलत: आपका भाग्योदय शीघ्र होगा। व्यापार में आपको लाभ होगा तथा विद्या एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण रहेंगे। आपके व्यक्तित्व का चहुमुंखी विकास इस चंद्र+गुरु के कारण होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र उच्च का होने से जातक प्रजावान होगा तथा ऊंची विद्या पढ़ेगा जिससे जातक की किस्मत चमकेगी।

6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि होने से जातक पुत्रवान् होगा। विद्या व संतान से जातक की कीर्ति बढ़ेगी।

7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को संतान संबंधी चिंता बनी रहेगी।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु होने से जातक की संतति शल्य चिकित्सा द्वारा होगी।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां षष्टम स्थान में चंद्रमा मेष (सम) राशि में है। चंद्रमा अपने घर से दसवें एवं मातृकारक तरीके मातृभाव से तीसरे स्थान पर है। चंद्रमा के कारण यहां '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। जातक को भाग्योदय हेतु कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। एक अन्य मत के अनुसार यहां चंद्रमा को षष्टम भाव में जाने का दोष नहीं लगता। मंगल की राशि में चंद्रमा होने से जातक ऊर्जावान् होगा।

दृष्टि–षष्टम स्थानगत चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक यात्रा करता रहेगा पर ऋणी नहीं होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 4 के अनुसार भाग्येश यदि छठे स्थान पर हो तो ऐसे जातक को बड़े भाई व मामा का सुख नहीं मिलता।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

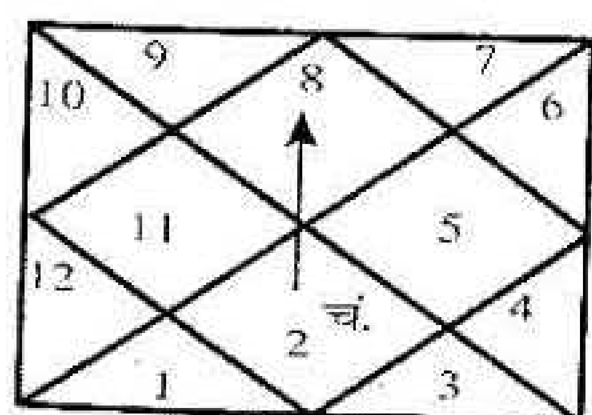
1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (मेष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की युति छठे भाव में होने से '**भाग्यभंग योग**' व '**राजभंग योग**' बनेगा। जातक को अच्छी नौकरी प्राप्त करने व भाग्योदय हेतु बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। मंगल यहां स्वगृही होगा। चंद्रमा खड्डे में जाने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल खड्डे

में गिरने से '**लग्नभंग योग**' भी बनता है। परन्तु षष्टेश का षष्टम भाव में स्वगृही होने से '**हर्ष नामक विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होती है जो मंगल की ऊर्जा को सकारात्मक बल देती है। फलत: ऐसा जातक धनी होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य भवन (कर्क राशि), व्यय भाव (तुला राशि) एवं लग्न भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी जिससे जातक भाग्यशाली एवं खर्चीले स्वभाव का होगा और जो कार्य हाथ में लेगा उसमें उसे बराबर सफलता मिलेगी।

3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध छठे स्थान '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतें उठानी पड़ेंगी।
4. **चंद्र+गुरु**–'भोजसंहिता के अनुसार वृश्चिकलग्न में छठे स्थान में यह युति मेष राशि में हो रही है। यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति+चंद्र षष्टमस्थ होने से '**धनहीन योग**', '**संतानहीन योग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' की सृष्टि हुई है। षष्टमस्थ बृहस्पति और चंद्रमा भाग्य भवन, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: शत्रु नाश होंगे, व्यापार-व्यवसाय में लाभ-हानि का उपक्रम चलता रहेगा। इस शुभ योग के कारण जातक को कोई गंभीर नुकसान नहीं पहुंचेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' कराता है। जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक को मित्रों से दगा मिलेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक के भाग्य में जबरदस्त बाधा आयेगी।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु गुप्त शत्रु बढ़ायेगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में



वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां सप्तम स्थान में चंद्रमा उच्च का है। वृष राशि के तीन अंशों तक चंद्रमा परमोच्च का होगा। चंद्रमा यहां अपने घर से ग्यारहवें एवं मातृकारक तरीके मातृभाव से चौथे स्थान पर है। जातक को माता का सुख मिलेगा। जातक की पत्नी अत्यधिक सुन्दर होगी। जातक को विद्या, बुद्धि, धन, पद, प्रतिष्ठा व सौभाग्य की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक सुन्दर, विनम्र, सौम्य एवं दूसरों का आदर करने वाला होता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 2 के अनुसार भाग्येश यदि सातवें हो तो जातक बड़ा ही गुणवान, यशस्वी व कीर्तिवान् होता है।

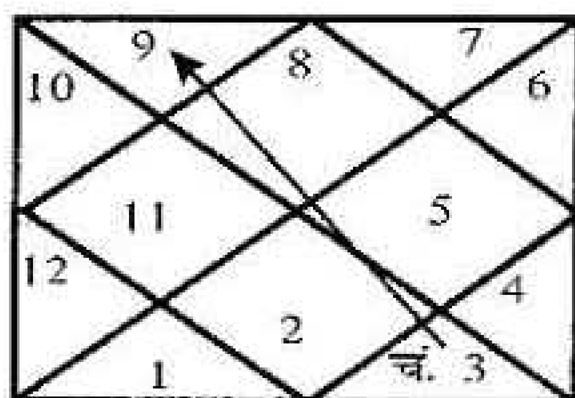
दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में भाग्योदय होगा। जातक को पत्नी का सुख तथा ऐश्वर्य संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

चंद्रमा की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति सातवें स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की युति सप्तम भाव में होने से जातक की पत्नी अत्यन्त रुपवती होगी। उसे परिश्रम का लाभ मिलेगा। '**यामिनीनाथ योग**' के कारण जातक भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। चंद्रमा वृष राशि में उच्च का होगा। फलत: यहां '**महालक्ष्मी योग**' बनेगा एवं '**यामिनीनाथ योग**' भी बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (सिंह राशि), लग्न भाव (वृश्चिक राशि) एवं धन भाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक महाधनी होगा। राज्य (सरकार) राजनीति में उसका दबदबा होगा। जातक जो भी कार्य हाथ में लेगा, उसमें उसे बराबर सफलता मिलेगा जातक समाज का धनी–मानी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध होने से जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सप्तमस्थ बृहस्पति+चंद्र वृष राशि में होंगे। यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा। '**गजकेसरी योग**' की केन्द्रगत यह स्थिति शक्तिशाली है जो क्रमश: '**कुलदीपक योग**' एवं '**यामिनीनाथ योग**' की सृष्टि कर रहा हैं। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान पर होगी। फलत: जातक के व्यक्तित्व का विकास द्रुतगति से होगा, जातक के मित्र सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित होंगे। जातक को व्यापार-व्यवसाय में आशातीत लाभ होते रहेंगे।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र होने से '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनेगा। जातक की पत्नी अति सुन्दर होगी। जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि जातक के भौतिक ऐश्वर्य व सुख सम्पत्ति में वृद्धि करेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक के वैवाहिक सुख में व्यवधान पड़ेगा एवं समरसता बिगड़ेगी।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु पेट का ऑपरेशन करायेगा। जातक को गुर्दे की तकलीफ भी हो सकती पर ठीक हो जायेगी।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश हैं। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां अष्टम स्थान में चंद्रमा मिथुन (शत्रु) राशि में है। चंद्रमा के कारण यहां '**राजभंग योग**' बना। चंद्रमा अपनी स्वराशि से बारहवें तथा मातृकारक तरीके मातभाव से पांचवें स्थान पर है। ऐसे जातक का दैहिक व मानसिक सुख कमजोर होता है। यहां पर चंद्रमा '**बालारिष्ट योग**' उत्पन्न करता है। पाप ग्रहों की युति से यह योग बलवान हो जाता हैं। जातक को पिता का सुख कमजोर होता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धन भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक का धन व्यर्थ में खर्च होता चला जायेगा।

निशानी–'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' अध्याय 23/श्लोक 104 के अनुसार '**ज्येष्ठभ्रातस्य सुख नैव तस्य जातस्य जायते**'। ऐसे जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होता।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति आठवें स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति आठवें भाव में होने से '**भाग्यभंग योग**' व '**राजभंग योग**' बनेगा।

जातक को उत्तम व्यवसाय नौकरी प्राप्त करने हेतु भाग्योदय हेतु अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

2. **चंद्र+मंगल**—यहां अष्टम स्थान में दोनों मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान (कन्या राशि), धन स्थान (धनु राशि) एवं पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होकर अष्टम में होने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल के अष्टम में जाने से '**लग्नभंग योग**' बनता है परन्तु षष्टेश के अष्टम भाव में जाने से '**हर्ष नामक विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होने से मगल को सकारात्मक ऊर्जा का बल मिला है। फलतः ऐसा जातक धनवान होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में धन अर्जित करेगा। जातक महान पराक्रमी होगा।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्र के साथ बुध '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में नुकसान होगा।

4. **चंद्र+गुरु**—वृश्चिकलग्न में अष्टमस्थ, बृहस्पति+चंद्र की युति मिथुन राशि में होगी। यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। 'भोजसंहिता' के अनुसार यहां चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है। यहां बैठने से '**धनहीन योग**', '**संतानहीन योग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' की सृष्टि होती है। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय स्थान, धन स्थान एवं सुख स्थान को देखते हैं। फलतः जातक को धन की हानि, सुख साधन की कमी अखरेगी। इसके साथ ही बढ़े हुए खर्च के कारण जातक को चिंता बनी रहेगी परन्तु इस शुभ योग के कारण जातक को सभी प्रकार की चिन्ताओं से मुक्ति मिल जाएगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्र के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनाता है। जातक को गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।

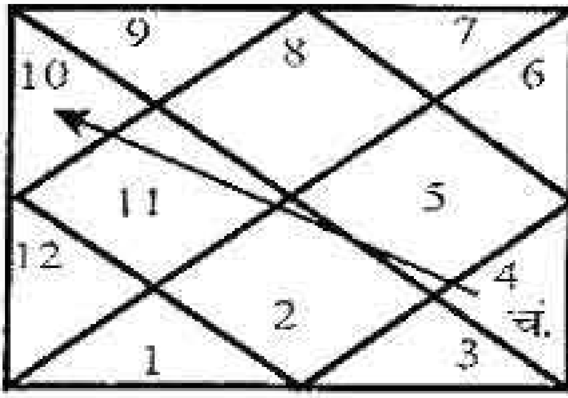
6. **चंद्र+शनि**—चंद्र के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। जातक के परिजन व मित्र पीठ पीछे जातक की निन्दा करेगे।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्र के साथ राहु '**बालारिष्ट योग**' बना रहा है। जन्म से आठवां वर्ष 20 व 32 वां वर्ष जातक के लिए घातक है आयु का खतरा है।

8. **चंद्र+केतु**—चंद्र के साथ केतु होने से जन्म का आठवां वर्ष घातक होगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश हैं। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां चंद्रमा स्वगृही है। मातृकारक



तरीके चंद्रमा मातृ भाव से छठे स्थान पर है। ऐसा जातक धनी, मानी, भाग्यशाली एवं समाज का गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। ऐसे जातक दानशील, क्षमाशील, समाज व जाति के सदैव हितैषी होते हैं। जातक अनेक मित्रों वाला लोकप्रिय व्यक्ति होता है।

दृष्टि–नवम भावगत चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐस जातक के अनेक भाई-बहन होते हैं। सभी सुखी होते हैं।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 1 के अनुसार भाग्येश यदि भाग्य स्थान में ही हो तो जातक धन-धान्य, अन्न-धन, सम्पत्ति, जमीन-जायदाद से युक्त आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक का जबरदस्त भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य नवमें स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति भाग्य स्थान में होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक परम भाग्यशाली होगा। उसको नौकरी-व्यवसाय की उत्तम प्राप्ति होगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। यहां चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच राशि का होने के से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। फलत: **'महालक्ष्मी योग'** मुखरित होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (तुला राशि), पराक्रम भाव (मकर राशि) एवं चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलत: जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा। जातक खुले दिल से धन खर्च करने वाला परोपकारी व दानी होगा। जातक के कुटुम्बी एवं मित्रजन प्रत्येक कार्य में जातक का साथ देंगे, सहयोग करेंगे।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध जातक को व्यापार में लाभ दिलायेगा। जातक बुद्धिमान होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–वृश्चिकलग्न के नवम भाव में बृहस्पति+चंद्र की युति कर्क राशि के अंतर्गत होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्र की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति होगी। **'गजकेसरी योग'** की यह सर्वोत्तम स्थिति है क्योंकि यहां चंद्रमा स्वगृही एवं बृहस्पति उच्च का होकर,

लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान को देखेंगे। फलत: आपको धन की कोई कमी नहीं रहेगी। आपका पराक्रम तेज होगा। मित्र वर्ग सम्पन्न एवं सहयोगात्मक भावना वाला होगा। आपको शिक्षा संबधी उच्च डिग्री मिलेगी तथा आपकी संतति भी सुयोग्य एवं संस्कारी होगी।

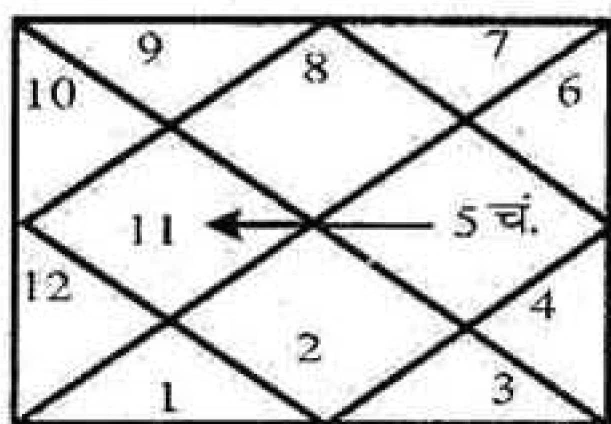
5. **चंद्र+शुक्र–** चंद्र के साथ शुक्र होने से जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

6. **चंद्र+शनि–** चंद्र के साथ शनि होने से जातक को भाईयों-परिजनों व मित्रों का सहयोग मिलेगा।

7. **चंद्र+राहु–** चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' से भाग्योदय में बाधा उत्पन्न करता है।

8. **चंद्र+केतु–** चंद्र के साथ केतु की युति जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगी।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में



वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां दशम भाव में चंद्रमा सिंह (मित्र) राशि में है। चंद्रमा अपनी राशि से दूसरे तथा मातृकारक तरीके मातृ भाव से सातवें स्थान पर है। जातक को माता का सुख मिलेगा। ऐसा जातक उच्च कोटि के पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा। जातक धनी होगा उसे उत्तम वाहन सुख मिलेगा। जातक को पैतृक मकान भी मिलेगा।

दृष्टि– चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) पर होगी। जातक की शिक्षा उत्तम होगी। उसे उत्तम मकान का सुख मिलेगा।

निशानी– 'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 2 के अनुसार भाग्येश यदि दसवें स्थान पर हो तो जातक राजमंत्री, सेनापति अथवा शासन का प्रमुख व्यक्ति होता है।

दशा– चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में रोजी-रोजगार के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। जातक का भाग्योदय होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य–** '**भोजसंहिता**' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दशम स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या की दोपहर 12 बजे के आस-पास होगा। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह

युति दशम भाव में होने से जातक को '**रविकृत राजयोग**' का लाभ मिलेगा। जातक को सरकारी घर, प्रतिष्ठा, उत्तम भवन, उत्तम वाहन का सुख मिलेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। मंगल यहां 'दिक्बली' होगा एवं '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान (वृश्चिक राशि), चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि) एवं पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनी होगा तथा भौतिक सुख उपलब्धियों से परिपूर्ण जीवन जीयेगा। ऐसा जातक जो कार्य हाथ में लेगा, उसमें उसे बराबर सफलता मिलेगी। जातक विद्यावान् होगा ऐसे जातक का आर्थिक व सामाजिक विकास प्रथम पुत्र के जन्म के पश्चात् होता है।

3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी होगा समाज में उसकी भारी इज्जत व प्रतिष्ठा होगी।

4. **चंद्र+गुरु**–वृश्चिकलग्न के दशम भाव में बृहस्पति+चंद्र की युति सिंह राशि में होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश के साथ युति होगी। यहां दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होकर क्रमशः '**यामिनीनाथ योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' की सृष्टि कर रहे हैं। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति अल्प प्रयासों से होती रहेगी। सुख में वृद्धि होगी। जातक को वाहन की प्राप्ति होगी एवं उसके शत्रुओं का नाश होगा। यह योग आपके लिए अत्यन्त शुभ है।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र जातक को धनवान बनायेगा। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।

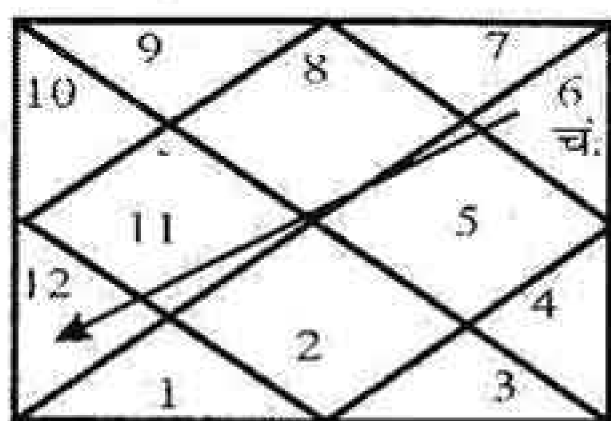
6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि जातक को घर का बढ़िया मकान देगा। जातक के पास एक से अधिक मकान होगे।

7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक की माता बीमार होगी। जातक को मानसिक तनाव रहेगा।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां एकादश स्थान में चंद्रमा कन्या (शत्रु राशि) में है। चंद्रमा यहां अपनी राशि से तीसरे एवं मातृकारक तरीके मातृभाव



से आठवें स्थान पर है फलतः माता का सुख कमजोर रहेगा। ऐसा जातक आत्मज्ञानी होता है। उसका सर्वांगीण विकास होता है। उसे व्यापार-व्यवसाय से लाभ होता है। जातक को विदेशी व्यापार एवं जलीय वस्तुओं से लाभ होता है।

दृष्टि–एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक को विद्या-बुद्धि बल, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 3 के अनुसार भाग्येश यदि एकादश में हो तो मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली, जनप्रिय, बृहस्पतिभक्त, धैर्यवान् एवं अनके सद्गुणों से युक्त होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रातः 10 से 12 बजे के मध्य होगा। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति एकादश भाव में होने से जातक को उत्तम विद्या, उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। जातक व्यापार-व्यवसाय में अच्छा धन कमायेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (धनु राशि), पंचम भाव (मीन राशि) एवं षष्टम भाव (मेष राशि) को देखेंगे। फलतः **'लक्ष्मी योग'** के कारण जातक धनवान होगा। जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक व सामाजिक उन्नति प्रथम संतति के जन्म के पश्चात होगी।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ उच्च का बुध जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक धनी होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–वृश्चिकलग्न के एकादश भाव में बृहस्पति+चंद्र की युति कन्या राशि में होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम स्थान को देखेंगे फलतः जातक का पराक्रम बढ़ेगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। इसके बाद प्रथम संतति के

बाद जातक का दूसरा भाग्योदय होगा। जातक समाज का धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

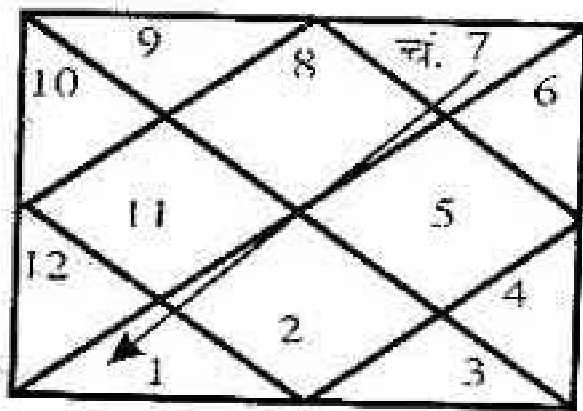
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र विवाह के बाद जातक को उन्नति करायेगा। जातक की व्यापार में उन्नति होगी।

6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि जातक का पराक्रम बढ़ावेगा। एवं उसे भौतिक सुख-सुविधाएं मिलती रहेंगी।

7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को मानसिक तनाव रहेगा। जातक की माता बीमार रहेगी

8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में



वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश हैं। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां द्वादश स्थान में चंद्रमा तुला (सम) राशि में है। चंद्रमा के कारण यहां '**राजभंग योग**' बना। चंद्रमा अपने घर से चौथे तथा मातृकारक तरीके मातृभाव से नवम स्थान पर होने से शुभ है। जातक को माता का सुख मिलेगा। ऐसे जातक के भाग्योदय में कुछ विलम्ब तो होगा परन्तु भाग्य खराब नहीं होगा। जातक की बाई आंख कमजोर होगी।

दृष्टि–द्वादश स्थानगत चंद्रमा की दृष्टि छठे भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसे जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 4 के अनुसार भाग्येश यदि बारहवें स्थान पर हो तो जातक को बड़े भाई व मामा का सुख नहीं मिलेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (तुला राशि) के होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 से 10 बजे के मध्य होगा। भाग्येश चंद्र और दशमेश सूर्य की यह युति बारहवें स्थान में होने के कारण '**भाग्यभंग योग**' एवं '**राज्यभंग योग**' बनेगा। ऐसे जातक को राजकीय नौकरी नहीं मिलेगी। जालक

को उत्तम नौकरी, व्यापार की प्राप्ति हेतु दिक्कतें आयेंगी। जातक को नेत्र पीड़ा होगी।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, पराक्रम स्थान (मकर राशि), षष्टम स्थान (मेष राशि) एवं सप्तम स्थान (वृष राशि) का देखेंगे। चंद्रमा द्वादश में होने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल द्वादश में होने से '**लग्नभंग योग**' बनता है परन्तु षष्टेश के द्वादश स्थान में जाने से 'हर्षनामक **विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होती है। जिससे मंगल में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ जाती है। ऐसा जातक धनी होता है। ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। ऐसे जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होता है। जातक यात्राओं में एवं व्यक्तिगत मौज-शौक में अधिक धन व्यय करेगा।

3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक को व्यापार में हानि होगी।

4. **चंद्र+बृहस्पति**–वृश्चिकलग्न के द्वादशस्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति तुला राशि में होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को देखेंगे। द्वादशस्थ इन दोनों ग्रह के कारण क्रमश: '**धनहीन योग**', '**संतानहीन योग**' एवं '**भाग्यहीन योग**' की सृष्टि होगी। फलत: यहां '**गजकेसरी योग**' की ज्यादा सार्थकता नहीं है। ऐसे जातक को धनहानि का सामना करना पड़ेगा। संतान प्राप्ति में विलम्ब होगा तथा भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। पर इस '**गजकेसरी योग**' के कारण जातक सभी संकटों व संघर्षों से पार पा लेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र स्वगृही '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक के दाम्पत्य सुख में कमी रहेगी।

6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। जातक के परिजन व मित्रों में निन्दा उसकी होगी।

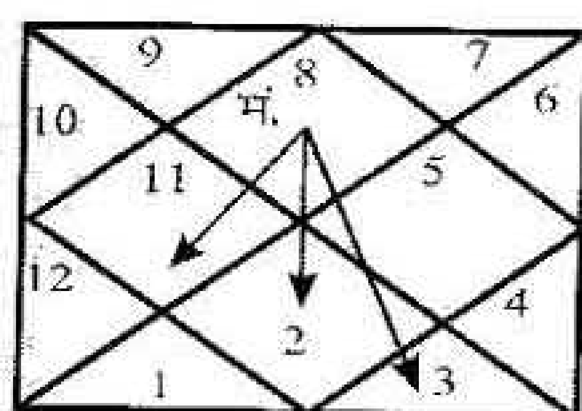
7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक यात्रा अधिक करेगा। जातक के विवाह में विलम्ब होगा एवं उसे नींद कम आयेगी।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु जातक को आध्यात्मिक मार्ग की ओर मोड़ेगा। जातक परापेकार में रुपया खर्च करेगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में



मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यहां लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। प्रथम स्थान में मंगल वृश्चिक राशि का स्वगृही होने से '**रुचक योग**' बना रहा है। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान् होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को '**मांगलिक**' बनायेगी। ऐसा जातक सिंह के समान पराक्रमी व स्वाभिमानी होता है। ऐसा जातक सच्चाई एवं सिद्धान्त के लिए लड़ता है कमजोरों की सहायता करता है। ऐसे जातक के स्वाभिमान को लोग उसका उग्र स्वभाव समझते हैं।

दृष्टि–लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (कुंभ राशि), सप्तम भाव (वृष राशि) एवं अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक की अपनी माता के साथ कम बनेगी। जातक के विवाह में विलम्ब होगा। जातक के शत्रु स्वत: ही नष्ट हो जायेंगे।

निशानी–ऐसे जातक का भाग्योदय 28 से 33 वर्ष की आयु के मध्य होता है। 'लोमेश संहिता' के अनुसार लग्नेश यदि लग्न में हो तो ऐसा जातक एक साथ दो स्त्रियों से संबंध रखता है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी तथा उसे भौतिक सुखों-संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक का ऐश्वर्य बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को पैतृक जमीन–जायदाद एवं स्वयं की

सम्पत्ति के संबंध में उत्तम लाभ देगा। जातक को शत्रुओं पर सदा विजय एवं राज दरबार में सदैव सफलता मिलेगी। यहां 'पद्मसिंहासन योग' भी बनेगा।

2. **मंगल+चंद्र**–यहां प्रथम स्थान मे दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। जहां मंगल स्वगृही होगा तथा चंद्रमा नीच राशि का होने से '**नीचभंग राजयोग** बनेगा। मंगल के कारण '**रुचक योग**' भी बनेगा। फलत: यहां '**महालक्ष्मी योग**' भलीभांति मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मकर राशि), सप्तम स्थान (मेष राशि) एवं अष्टम स्थान (वृष राशि) पर होगी। ये सभी राशियां इन ग्रहों की स्व एवं उच्च राशियां हैं। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा परंतु जातक विवाह के बाद धनी होगा। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का मान-मर्दन करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक के पास उत्तम वाहन, भवन एवं सभी सुख-सुविधाएं होंगी।

3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध की युति '**कुलदीपक योग**' बनायेगी। जातक सोचेगा बहुत, व्यापार में लाभ होगा।

4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' बनायेगा। जातक आर्थिक रुप से सुदृढ़ होगा। पराक्रम के बहुत धन कमायेगा।

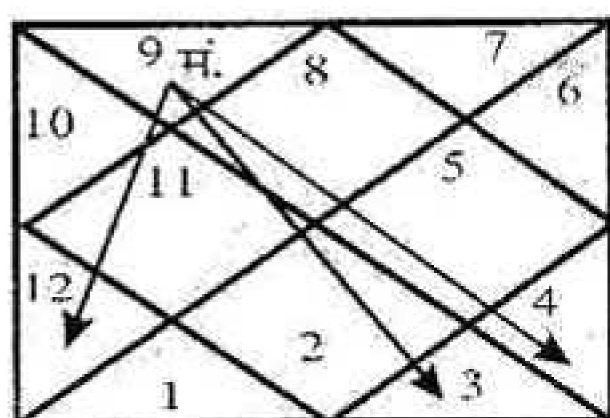
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक स्वयं 'कुलदीपक' की तरह परिवार का नाम रोशन करेगा।

6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि यहां शुभफलदायक है। व्यक्ति यात्राओं के कारोबार से कमायेगा। व्यक्ति पराक्रमी एवं सुखी होगा।

7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसा जातक निसंदेह लड़ाकू योद्धा होता है तथा कभी भी अपनी हार नहीं मानता। यहां बहुविवाह योग बनता है।

8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु की युति जातक को कोर्ट-केस में विजय देगी।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में



मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां द्वितीय स्थान में मंगल धनु (मित्र) राशि में है।

ऐसे जातक को परिश्रम का फल मिलेगा। जातक अपने परिश्रम से खूब धन कमायेगा। उसे पत्नी द्वारा भी धन मिलेगा। जातक की वाणी कठोर एवं गंभीर अर्थवाली होगी। 'लोमेश संहिता' के अनुसार षष्टेश यदि द्वितीय भाव में हो तो ऐसा जातक परदेश में जाकर सुख पाता है।

दृष्टि—द्वितीय भावगत मंगल की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि), अष्टम स्थान (मिथुन राशि) एवं भाग्यस्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक विद्या, बुद्धि का उत्तम लाभ होगा। जातक दीर्घजीवी होगा। ऐसा जातक भाग्यवान होगा।

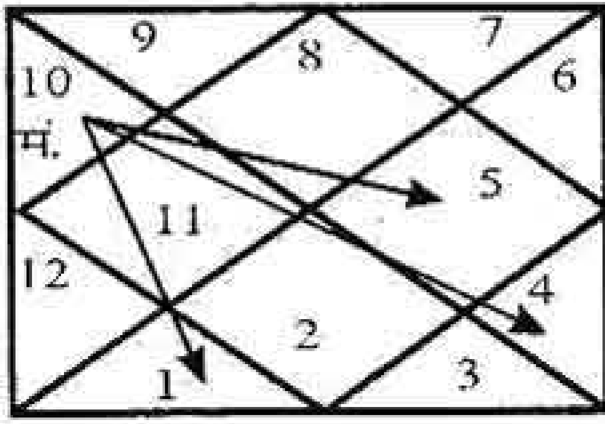
निशानी—जातक का जन्म बड़े कुटुम्ब-परिवार में होता है। ऐसे जातक से जो वाद-विवाद करता है, वह हार जाता है।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कराता है। व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से बहुत कमाता है तथा पुश्तैनी धन भी होती है।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां द्वितीय स्थान में दोनों धनु राशि मे होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव (मीन राशि), अष्टम भाव (मिथुन राशि) एवं भाग्यभवन (कर्क राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनी होगा। सौभाग्यशाली होगा। अपने शत्रुओं का मान-मर्दन करने मे सक्षम होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के प्रजनन के बाद होगी।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध धन संग्रह में कठिनाई देगा। अष्टमेश व षष्टेश की युति धनस्थान में जातक की वाक्शक्ति को कुण्ठित करता है।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति 'शत्रुमूल धनयोग' बनायेगा। ऐसे जातक को शत्रु से धनलाभ होगा। मित्र भी हर समय मदद के लिए तैयार मिलेंगे।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र जातक को विवाह के बाद धनी बनायेगा। ससुराल का खानदान अच्छा होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि व्यक्ति को धनी व सुखी बनायेगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। यहां दत्तक पुत्र का योग बनाता है। व्यक्ति को धनी व सुखी बनाने में यह युति बाधक है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु जहां धन संग्रह में बाधक है। वहां कुटुम्बी जनों में अकारण रंजिश भी कराता है।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में



मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां तृतीय भाव में मंगल उच्च का है। मकर राशि के 28 अंशों में मंगल परमोच्च का होता है। ऐसा जातक महान् पराक्रमी, साहसी, शौर्यवान् एवं कर्त्तव्यपारायण होता है। जातक ऊर्जावान होगा। ऐसे जातक के दो भार्या होती है। तथा तीन भाईयों का योग होता है। जातक आप अकेला नहीं होता।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि षष्टम भाव (मेषराशि), भाग्य भवन (कर्क राशि) एवं दशम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक के शत्रुओं का नाश होगा। जातक भाग्यशाली होगा। उसे राजदरबार में मान-सम्मान (प्रतिष्ठा) मिलेगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 6/श्लोक 6 के अनुसार यदि तीसरे स्थान में हो तो ऐसा मनुष्य बड़ा क्रोध करने वाला होता है। उसके नेत्र हरदम लाल रहते हैं। ऐसा व्यक्ति दूसरों से द्वेष रखता है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य व्यक्ति को महान् पराक्रमी बनाता है। पर जीवन में बहुत ऊंची सफलताओं को प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर राशि में मंगल उच्च का होगा। फलत: यहां '**महालक्ष्मी योग**' मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि षष्टमभाव (मेष राशि), भाग्यभवन (कर्क राशि) एवं दशम भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक धनी होगा। अपने शत्रुओं का नाश करने मे सक्षम होगा। जातक भाग्यशाली एवं महान् पराक्रमी होगा। जातक का सशक्त प्रभाव देश की राजनीति में भी होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध व्यक्ति को चंचल स्वभा का बनाता है। ऐसा जातक व्यापार प्रिय होता है।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति होने से व्यक्ति बुजुर्गो द्वारा प्रदत्त धन की रक्षा करता है। उसे बढ़ाता है। घटाता नहीं।

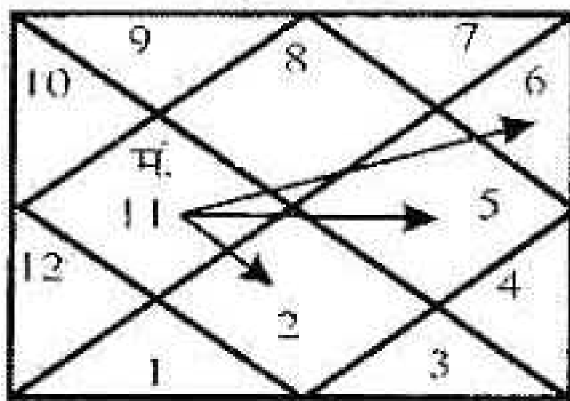
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र शुभ है। ऐसे व्यक्ति का धन उसके भाईयों के काम आता है। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ है।

6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनाता है। जातक जीवन में विशेष उपलब्धियों की बुलन्दियों को छूयेगा।

7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। जातक के बड़े भाई नहीं होते। भाई की अकाल मृत्यु भी होगी।

8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु भाईयों में लड़ाई कराता रहेगा। इसका प्रभाव बेटों पर भी पड़ेगा।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां चतुर्थ स्थान में मंगल कुंभ (सम) राशि में होकर कुण्डली 'मांगलिक' बनायेगा। ऐसे जातक की भाई-बहन व माता के साथ कम बनेगी। विद्या विलम्ब से होगी। 'लोमेश संहिता' अध्याय 1/श्लोक 4 के अनुसार लग्नेश यदि चतुर्थ में हो तोऐसा जातक माता-पिता की छात्र-छाया में आगे बढ़ता है। उसके अनेक भाई-बहन होते हैं उसे सरकारी नौकरी प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे।

दृष्टि–चतुर्थ स्थानगत मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि), दसम भाव (सिंह राशि) एवं एकादश भाव (कन्या राशि) पर होगी। विवाह में विलम्ब होगा। रोजी-रोजगार की प्राप्ति विलम्ब से होगी। बड़े भाई का लाभ नहीं होगा।

निशानी–ऐसे जातक पुराने वाहन खरीदेंगे एवं पुराने मकान में रहेंगे।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में रोग, ऋण व शत्रुओं से संघर्ष रहेगा। मानसिक परेशानियां रहेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य 'पद्मसिंहासन योग' बनायेगा। जातक को माता-पिता का सुख मिलेगा। जातक स्वयं कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ, उच्च पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

2. **मंगल+चंद्र**–यहां चतुर्थ स्थान मे दोनों कुंभ राशि में होंगे। मंगल यहां **'दिक्बली'** होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को देखेंगे। फलतः जातक धनी होगा। व्यापार-व्यवसाय में अच्छा धन कमायेगा। ऐसा जातक विवाह के बाद आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक ऊंचाइयों को स्पर्श करेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध **'कुलदीपक योग'** बनायेगा। ऐसा व्यक्ति किसी का बुरा नहीं चाहता पर दूसरों लोग उसका बुरा जरुर चाहेंगे। जातक क्षमाशील होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति होने से व्यक्ति के घर के लोगों की गिनती में कमी नहीं आयेगी। व्यक्ति कुल का नाम रोशन करेगा। धनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र व्यक्ति के ननिहाल पर बुरा असर डालता है। जातक की पत्नी का स्वास्थ्य खराब रहता है। जातक कुलदीपक की तरह परिवार का नाम रोशन करेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि 'शश योग' बनायेगा। जातक राजा के समान बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा पर सम्पत्ति में विवाद रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। जातक का निवास स्थान दोषपूर्ण होगा। घर में पिशाच बाधा संभव है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु होने से जातक कठिनाइयों से घिरा रहेगा।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में

मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां पंचम स्थान में मंगल मीन (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक की विद्या, बुद्धि, तर्क शक्ति तेज रहेगी। जातक को पुत्र लाभ होगा। संतानसुख उत्तम पर संतान संबंधी चिंता जरुर रहेगी। मंगल अपनी राशि (मेष) से बारहवें होने के कारण भाईयों से कम बनेगी। परन्तु उस व्यक्ति के सड़क चलते बहुत से मित्र होते हैं।

दृष्टि–पंचम भावगत मंगल की दृष्टि अष्टम स्थान (मिथुन राशि), लाभ भाव (कन्या राशि) एवं द्वादश भाव (तुला राशि) पर है। जातक दीर्घजीवी होगा। व्यापार मे लाभ रहेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–जातक को तीन या पांच पुत्र होगे। 'लोमेश संहिता' अध्याय 1/श्लोक 5 के अनुसार लग्नेश यदि पांचवें हो तो जातक के सबसे बड़ी संतान की मृत्यु उसकी आंखों के सामने हो जाती है।

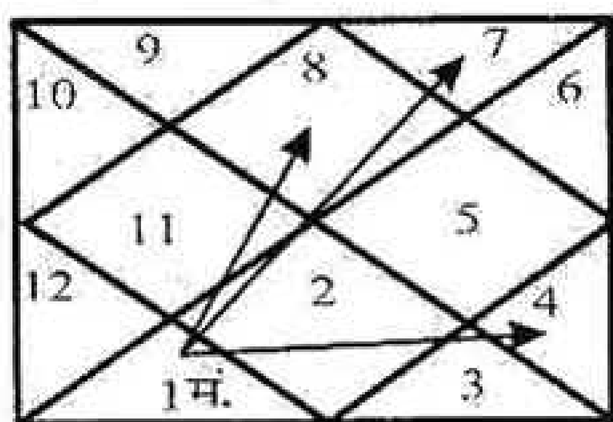
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य 'पद्मसिंहासन योग' बनाता है। जातक मध्यम परिवार में जन्म लेकर भी शिक्षा व अध्यात्मक के क्षेत्र में ऊंची उपलब्धियों को प्राप्त करेगा। जातक के अनेक पुत्र होंगे पर एक पुत्र अत्यन्त तेजस्वी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां अष्टम भाव (मिथुन राशि), लाभ स्थान (कन्या राशि) एवं व्यय भाव (तुला राशि) पर होगी। इस 'लक्ष्मीयोग' के कारण जातक धनवान होगा। जातक लम्बी उम्र वाला होगा। व्यापार-व्यवसाय व नौकरी से यथेष्ट धन अर्जित करेगा। साथ ही चंद्रमा व्ययशील प्रवृति, खर्चीले स्वभावत का परोपकारी व दानी होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ यहां नीच का बुध कई बार शिक्षा अधूरी छुड़ा देता है। जातक के निर्णय कई बार गलत हो जाता है।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ स्वगृही बृहस्पति पांच पुत्रों का योग देता है। ऐसे जातक को दूसरों से दान या भेंट नहीं लेना चाहिए अपितु समय-समय पर दूसरों को दान व भेंट देने से जातक का भाग्य दिन दुना रात चौगुना खिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ उच्च का शुक्र व्यक्ति को कामी बनायेगा। जातक कला-संगीत, अभिनय का प्रेमी होता है। विद्या के क्षेत्र में जातक आगे बढ़ेगा। इंजीनियर होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को उन्नति देगा। प्रथम पुत्र उत्पन्न के साथ ही जातक का भाग्य खिलने लगेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। स्त्री को ऋतु संबंधी रोग होगा। गर्भपात की संभावना भी रहेगी।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु विद्या व संतान में रुकावट देगा।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में

मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ



फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। षष्टम स्थान में मंगल स्वगृही होगा। मंगल की इस स्थिति से '**लग्नभंग योग**' बना। षष्टेश छठे स्थान में स्वगृही होने से 'हर्षनामक विपरीत रायजोग' भी बना। ऐसे जातक कुशल योद्धा होते हैं। इन्हें शत्रुओं का भय नहीं रहता। जातक धनी होगा। उसके एक साथ दो स्त्रियों से संबंध होगा।

दृष्टि–षष्टमस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य भवन (कर्क राशि), व्यय भाव (तुला राशि) एवं लग्न भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा। अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का होगा। आवक व खर्च बराबर रहेगा। जातक अपने कठोर परिश्रम से भाग्य की रेखाओं को बदलने की सामर्थ्य रखेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 6/श्लोक 1 के अनुसार छठे भाव का स्वामी यदि छठे हो तो ऐसा मनुष्य अपनी जाति, स्वजन में शत्रु जैसा व्यवहार करता है, परन्तु अन्य जाति से मित्रता रखता है।

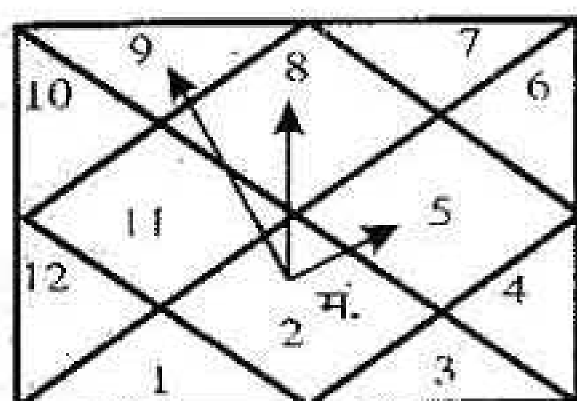
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक की कीर्ति नष्ट होगी। परन्तु '**किम्बहुना नामक राजयोग**' के कारण राजा के सम्मान जरुर मिलेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह मेषराशि में होंगे। मंगल यह स्वगृही होगा। चंद्रमा खड्डे में जाने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल खड्डे में गिरने से '**लग्नभंग योग**' भी बनता है। परन्तु षष्टेश का षष्टम भाव में स्वगृही होने से '**हर्ष नामक विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होती है जो मंगल की ऊर्जा को सकारात्मक बल देती है। फलतः ऐसा जातक धनी होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्यभवन (कर्क राशि), व्ययभाव (तुला राशि) एवं लग्नभाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जिससे जातक भाग्यशाली होगा। खर्चीले स्वभाव का होगा और जो कार्य हाथ में लेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध 'सरल नामक **विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा। ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति हो तो ऐसा व्यक्ति खुद ही बड़ा भाई होता है। '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' के कारण आर्थिक विषमताएं आयेगी। संतान विलम्ब से होगें।

5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनाता है। जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगी। प्रेम में बदनामी होगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक के मित्र दगेबाज होंगे। जातक को पेट की बीमारियां होगी।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक को शारीरिक सुख कमजोर रहेगा। रक्त विकार संभव है। ऐसा व्यक्ति अपने शत्रुओं को पराजित करके ही दम लेता है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु के गुप्त शत्रु बढ़ायेगा। जिसका असर भाई व बेटों पर भी होगा।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में



मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। सप्तम स्थान में मंगल वृष (सम) राशि में है। फलत: यह कुण्डली 'मांगलिक' एवं 'लग्नाधिपति योग' वाली बनी। जातक का विवाह विलम्ब से हो पर गृहस्थ सुखों की समृद्धि होगी। जातक कामी होगा। यौन ऊर्जा तेज रहेगी। जातक का अन्य स्त्रियों से संबंध होगी।

दृष्टि–सप्तमस्थान पर स्थित मंगल की दृष्टि दशम भाव (सिंह राशि), लग्न भाव (वृश्चिक राशि) एवं धन भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक का राज सरकार में वर्चस्व होगा। जातक धनी होगा एवं परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 6/श्लोक 6 के अनुसार लग्नेश यदि सातवें हो तो उस जातक की पत्नी जातक के सामने ही मर जाती है और जातक विरक्त हो जाता है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

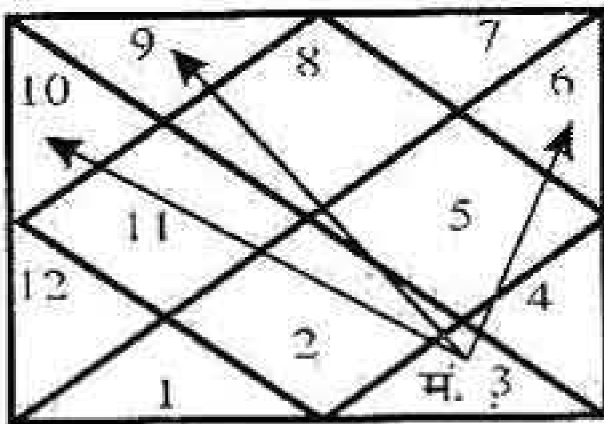
मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य गृहस्थ सुख में कमी कराता है। जातक की पत्नी गुस्सैल होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह वृषराशि में होंगे। चंद्रमा वृष राशि में उच्च का होगा। फलत: यहां '**महालक्ष्मी योग**' बनेगा एवं '**यामिनीनाथ**

योग' भी बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (सिंह राशि), लग्नभाव (वृश्चिक राशि) एवं धनभाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक महाधनी होगा। राज्य (सरकार) राजनीति में उसका दबदबा होगा। जो भी कार्य हाथ में लेगा, उसमें बराबर सफलता मिलेगा जातक समाज का धनी-मानी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध '**कुलदीपक योग**' बनाता है। पर जातक अपनी पत्नी के साथ खटपट रहेगी क्योंकि यहां सप्तम भाव में षष्टेश व अष्टमेश की युति होगी।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति उत्तम गृहस्थी का सुख देगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा। जातक कुलदीपक होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व मौज-शौक वाला होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि यहां 'मांगलिक दोष' को दूना करेगा। जातक धनवान होगा। ससुराल पराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक का विवाह देरी से होता है। विवाह प्रायः दो होते हैं पहली स्त्री से नहीं निभने के कारण दूसरा विवाह होता है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु विवाह सुख में बाधक है। जातक की भागीदारों के साथ नहीं बनेगी।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में



मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां अष्टम स्थान में मंगल मिथुन (शत्रु) राशि में है। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली 'मांगलिक' बनी। यहां '**लग्नभंग योग**' एवं 'हर्षनामक **विपरीत राजयोग**' भी बना। ऐसा जातक धनी होगा। उसे अचानक धन, यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। भौतिक सुखों की प्राप्ति थोड़े संघर्ष के बाद होगी। ऐसा जातक तंत्र विद्या का जानकार व तांत्रिक होता है।

दृष्टि–अष्टम भावगत मंगल की दृष्टि एकादश भाव (कन्या राशि), धन भाव (धनु राशि) एवं पराक्रम भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को व्यापार में लाभ होगा। जातक धनवान होगा एवं पराक्रमी होगा।

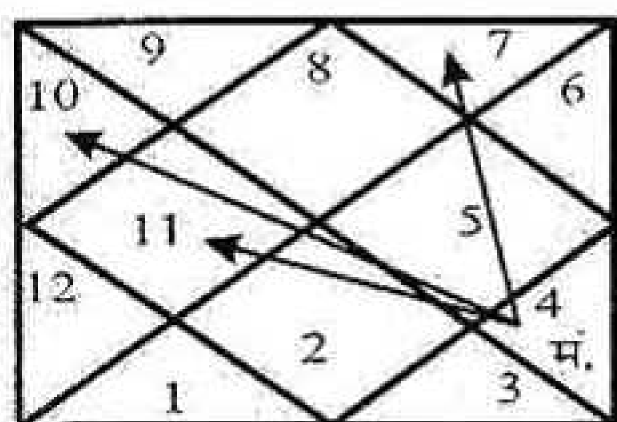
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 6/श्लोक 3 के अनुसार छठे भाव का स्वामी आठवें हो तो मनुष्य सदैव बीमार रहने वाला एवं दूसरों की भार्या से गमन करने वाला होता है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' करायेगा। जातक को सरकारी कर्मचारी तंग करेंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां अष्टम स्थान में दोनों मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां लाभस्थान (कन्या राशि) धन स्थान (धनु राशि) एवं पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। चंद्रमा यहा शत्रुक्षेत्री होकर अष्टम में होने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल के अष्टम में जाने से '**लग्नभंग योग**' बनता हैं परन्तु षष्टेश का अष्टमभाव में जाने से '**हर्ष नामक विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होने से मगल को सकारात्मक ऊर्जा का बल मिला है। फलत: ऐसे जातक धनवान होगा। व्यापार-व्यवसाय में धन अर्जित करेगा। जातक महान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक को धनी बनायेगा, परन्तु मामा का पक्ष कमजोर रहेगा। धन का अभाव रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनाता है। ऐसे जातक को आर्थिक विषमता के साथ सुयोग्य पुत्र
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करेगा। जातक को दम्पत्य सुख विलम्ब (देरी) से मिलेगा। जातक को गुप्त रोग होंगे।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' व '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु संघर्षशील रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। जादू रसायन के पीछे सम्पत्ति नष्ट करता है। आयु मध्यम होती है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को गुस्सैल बनाता है। इसका प्रभाव जातक के पुत्र एवं भाई पर भी होगा।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में



मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां मंगल नवम स्थान में नीच का है। कर्कराशि के 20 अंशाके में मंगल परमनीच का कहलायेगा। लग्नेश मंगल का भाग्य स्थान में होने से जातक का भाग्य 28 वर्ष के बाद उन्नति मार्ग की ओर प्रशस्त होगा। जातक को माता-पिता, भाई-बहन, स्त्री-संतान का सुख होता है। जातक को समाज में मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा व यश की प्राप्ति होती है।

दृष्टि–नवम भावगत मंगल की दृष्टि द्वादश भाव (तुला राशि), पराक्रम भाव (मकर राशि) एवं चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। प्रबल पराक्रमी होगा एवं जातक के पास उत्तम वाहन होगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 1/श्लोक 8 के अनुसार लग्नेश यदि नवमें स्थान में हो तो जातक भाग्यवानएवं जनवल्लभ होता है। वह चतुर वक्ता होता है। अन्न-धन, वैभव से परिपूर्ण होता है।

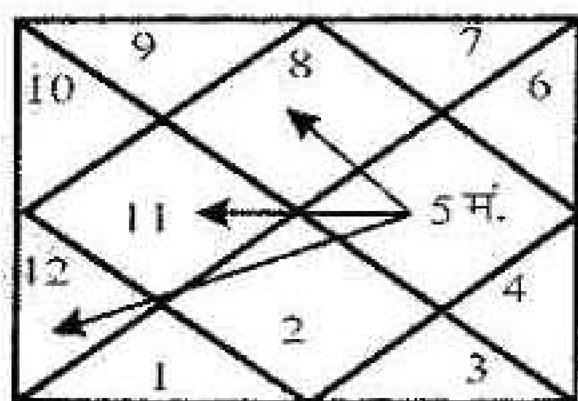
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। भाग्योदय का अवसर प्रदान करेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य **'पद्मसिंहासन योग'** बनायेगा। ऐसा जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ राजा के पास उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। यहां चंद्रमा स्वगृी एवं मंगल नीच राशि का होने के से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। फलतः **'महालक्ष्मी योग'** मुखरित होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (तुला राशि), पराक्रम भाव (मकर राशि) एवं चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलतः जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा। जातक खुले दलि से धन खर्च करने वाला परोपकारी व दानी होगा। उसके कुटुम्बी एवं मित्रजन उसके प्रत्येक कार्य में जातक का साथ देंगे, सहयोग करेंगे।

3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को कुण्ठित व चालक बुद्धिवाला बनायेगा। जातक को व्यापार में लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति यहां '**नीचभंग राजयोग**' करायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व धनवान होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा। जातक की पत्नी का स्वास्थ्य नरम रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि वाला व्यक्ति अच्छे,परिवार में जन्म लेता है। जातक द्वारा निरन्तर यज्ञ या धार्मिक अनुष्ठान करने से किस्मत चमकेगी।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक को बड़े भाई-बहनों का सुख नहीं। भाग्योदय में बाधा रहती है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु संघर्ष के साथ भाग्योदय कराता है। ऐसा व्यक्ति मूलतः झगड़ालू होता है।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में



मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां दशम स्थान में मंगल सिंह (मित्र) राशि में होकर 'दिक्‌बली' होकर '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। ऐसे जातक को धन-सम्पत्ति, नौकरी-व्यवसाय से उन्नति, समाज-जाति में मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। एक अन्य मत के अनुसार षष्टेश यदि दशवें स्थान में हो तो जातक परदेश जातक उत्तम धन व यश कमाता है। सुखी होता है।

दृष्टि–दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न भाव (वृश्चिक राशि), चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) एवं पंचम भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। जातक के पास भरपूर भूमि एवं वाहन सुख होगा। विद्या एवं संतान सुख उत्तम मिलेगा।

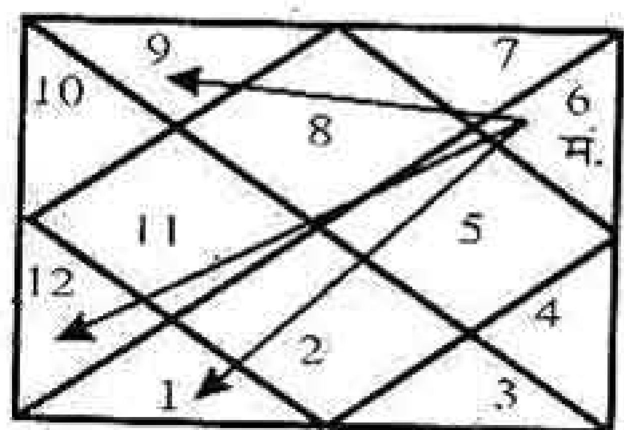
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 1/श्लोक 4 के अनुसार लग्नेश यदि दसवें हो तो ऐसा जातक माता-पिता की छत्र-छाया में आगे बढ़ता है। उसे भाई-बहन का सुख होता है तथा सरकारी नौकरी प्राप्त करने के अवसर भी उसे मिलते हैं।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा से जातक की अपूर्व उन्नति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य '**रविकृत राजयोग**' एवं 'पद्मसिंहासन योग' के कारण जातक को राज-सरकार में ऊंचा पद दिलायेगा। जातक अपने व्यापार-व्यवसाय में ऊंचाईयों तक पहुंचेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। मंगल यहां 'दिक्बली' होगा एवं '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्नस्थान (वृश्चिक राशि), चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि) एवं पचंम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनी होगा। भौतिक सुख उपलब्धियों से परिपूर्ण जीवन जीयेगा। ऐसा जातक जो कार्य हाथ में लेगा, उसमें बराबर सफलता मिलेगी। जातक विद्यावान होगा ऐसे जातक का आर्थिक व सामाजिक विकास प्रथम पुत्र प्रजनन के पश्चात् होता है।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक की शक्ति का अपव्यय गलत कार्यों में करायेगा। फिर भी जातक कुल का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति जातक को विद्यावान बनायेगा। जातक धनी होगा। '**कुलदीपक योग**' एवं '**केसरी योग**' के कारण जीवन में कोई भी काम रुका हुआ नहीं रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा। जातक की पत्नी अभिमानी होगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि होने से जातक के पास जमीन-जायदाद बहुत होगी। जातक के पास एक से अधिक मकान होगे।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनाता है। ऐसा जातक लड़ाकू व उद्दण्ड होगा। सरकार से बाधा संभव है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु होने से जातक को समाज में ऊचा स्थान प्राप्त करने हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को पुत्र प्राप्ति देरी से होगी।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में



मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां एकादश स्थान में मंगल कन्या (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक को धन-पद, प्रतिष्ठा,

जमीन-जायदाद, ठेकेदारी-व्यवसाय से लाभ होता है। लग्नेश एकादश में हो तो मनुष्य परिश्रम में रत रहने वाला होता है। पुरुषार्थी होता है तथा पुरुषार्थ से धन कमाता है।

दृष्टि–एकादश भावगत मंगल की दृष्टि धनभाव (धनु राशि), पंचम भाव (मीन राशि) एवं षष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक विविध स्रोतों से धन कमायेगा। उसे टैक्नीकल विद्या की प्राप्ति होगी जातक रोग व शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल होगा।

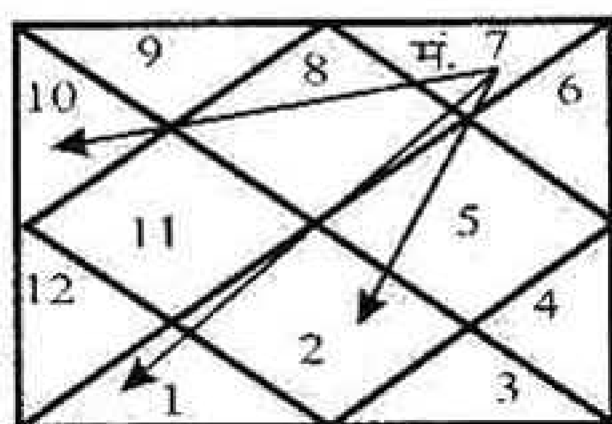
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 1/श्लोक 2 के अनुसार ऐसा जातक कीर्तिवान्, गुणवान्, धनवान, स्वाभिमानी व साहसी होता है पर उसे पुत्र सुख में न्यूनता रहेगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को उत्तम जायदाद देगा। जातक उद्योगपति होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धनभाव (धनु राशि), पंचम भाव (मीन राशि) एवं षष्टम भाव (मेष राशि) को देखेंगे। फलत: 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक व सामाजिक उन्नति प्रथम संतति प्रजनन के पश्चात होगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध उच्च का होकर जातक को व्यापार-व्यवसाय में भारी लाभ दिलायेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति जातक को परिश्रम का पूरा लाभ देगा। जातक का पिता या भाई यदि जातक के साथ हो तो जातक करोड़ों में खेलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र नीच का शुक्र जातक को व्यापार में उन्नति दिलायेगा। पत्नी की भागीदारी व्यापार में शुभ रहेगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि होने से जातक के आमदनी के स्रोत अच्छे रहेंगे। मित्र मदद के लिए तैयार खड़े मिलेंगे।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होता। व्यापार में नुकसान होता है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु व्यापार में संघर्ष रहेगा। जातक को पुत्र के विषय में चिंता लगी रहेगी।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में



मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। द्वादश स्थान में मंगल तुला (सम) राशि में है। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली 'मांगलिक' होकर '**लग्नभंग योग**' बनायेगी। षष्टेश मंगल द्वादश में होने से 'हर्षनामक **विपरीत राजयोग**' भी बनता। ऐसा जातक धनी-मानी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। ऐसा जातक तांत्रिक होता है। मंत्र-तंत्र विद्या का जानकार एवं हिंसक स्वभाव का होता है।

दृष्टि–द्वादशस्थानगत मंगल की दृष्टि पराक्रम भाव (मकर राशि), सप्तम भाव (मेष राशि) एवं सप्तम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। उसके दाम्पत्य-जीवन में कटुता रहेगी। जातक पराक्रमी होगा पर पीठ पीछे निन्दा बहुत होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 6/श्लोक 2 के अनुसार षष्टेश यदि बारहवें स्थान पर हो तो मनुष्य सदैव बीमार रहता है तथा विद्वानों में ईर्ष्या रखता है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य नीच का होकर '**राजभंग योग**' बनायेगा। ऐसा व्यक्ति क्रोधी होता है तथा क्रोध से अपना ही काम बिगाड़ता है।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, पराक्रम स्थान (मकर राशि), षष्टम स्थान (मेष राशि) एवं सप्तम स्थान (वृष राशि) को देखेंगे। चंद्रमा द्वादश में होने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल द्वादश में होने से '**लग्नभंग योग**' बनता है परन्तु षष्टेश का द्वादश स्थान में जाने से 'हर्षनामक **विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होती है। जिससे मंगल में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ जती है। ऐसा जातक धनी होता है। ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। ऐसे जातक की आर्थिक विकास विवाह के बाद होता है। जातक यात्राओं में एवं व्यक्तिगत मौज-शौक में अधिक व्यय करेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक को धनी-मानी बनायेगा। पर ऐसा जातक अक्सर जल्दबाजी में गलत निर्णय लेकर

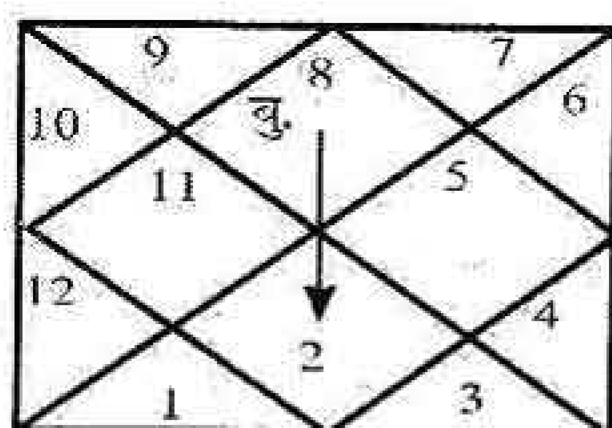
बाद में पछताता हैं

4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति होने से जातक परिवार बढ़ेगा। परन्तु '**धनहीन योग**' के कारण अर्थाभाव रहेगा। ऐसा जातक जिसको भी आशीर्वाद देगा, फलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगा। जातक का धन शुभ कार्यों में खर्च होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि उच्च का होकर अच्छा फल देगा। जातक की शक्ति को सकारात्मक मोड़ देगा। जातक धनी व दानी होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक को स्त्री सुख नहीं मिलता। रक्त, पित्त, कोढ़, विष बाधा की संभावना रहती है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु होने से व्यक्ति अपने जीवन में बहुत से शत्रु पैदा कर लेगा। खर्च अधिक करेगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलत: परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अत: बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां प्रथम स्थान में बुध वृश्चिक (मित्र) राशि में है। बुध के कारण '**कुलदीपक योग**' बना। बुध की यह स्थिति स्वास्थ्य, बुद्धि, विद्या व आयु में वृद्धिकारक है। ऐसा जातक कुशाग्र बुद्धि वाला होता है तथा अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर होने से ऐसे जातक का जीवनसाथी बुद्धिमान व सुन्दर होता है। जातक की पत्नी वफादार होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 1 के अनुसार यदि लग्न स्थान में हो तो ऐसा जातक महामहोपदेशक, कौतुहलपूर्ण व अचम्भें में डालने वाली वाणी बोलता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। प्रथम में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध केन्द्र में होने से '**कुलदीपक योग**' बनेगा। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। राज्य में प्रभाव रखने वाला व्यक्ति होगा। अपने कुटुम्ब परिवार

का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा उसका भाग्योदय विवाह के बाद शीघ्र होगा।

2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा नीच का जातक के सोच को कुलषित करेगा। पर जातक भाग्यशाली होगा। व्यापार व जलीय वस्तुओं से कमायेगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल '**रुचक योग**', '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।

4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को पुरुषार्थ के द्वारा महाधनी व्यक्ति बनायेगा।

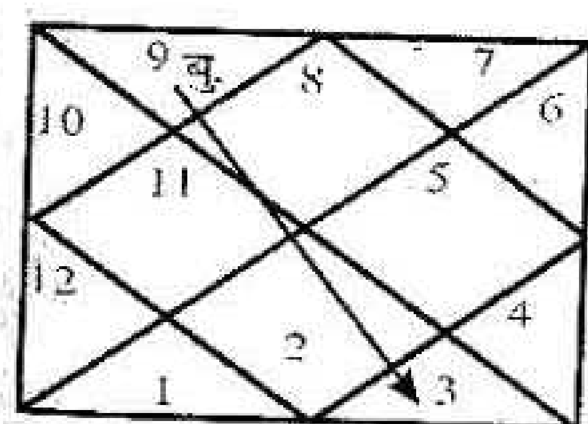
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक का शीघ्र विवाह करायेगा। जातक धनी व सुखी व्यक्ति होगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से जातक पराक्रमी, सुखी एवं साधन-सम्पन्न व्यक्ति होगा।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा। ऐसे जातक खुद को होशियार एवं दूसरों को महामूर्ख समझता है। ऐसे जातक को अपने व्यक्तित्व विकास हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक का उग्र स्वभाव का किंतु शत्रुजेयी बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां द्वितीय स्थान में बुध धनु (मित्र) राशि में है। ऐसा जातक वाक्यपटु होगा। सभ्य व शिष्ट वाणी बोलेगा। जातक धनी होगा। धन-संतान, स्त्री-पुत्र का सुख उसे मिलेगा। ऐसे जातक का धन व्यापार से बढ़ेगा।

दृष्टि–द्वितीय भावगत बुध की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि) अपने ही घर पर होगी। फलतः जातक दीर्घजीवी होगा। उसके गुप्त गुण एवं रहस्यमय बुद्धि के कारण जातक समाज में प्रशंसित व्यक्ति होगा।

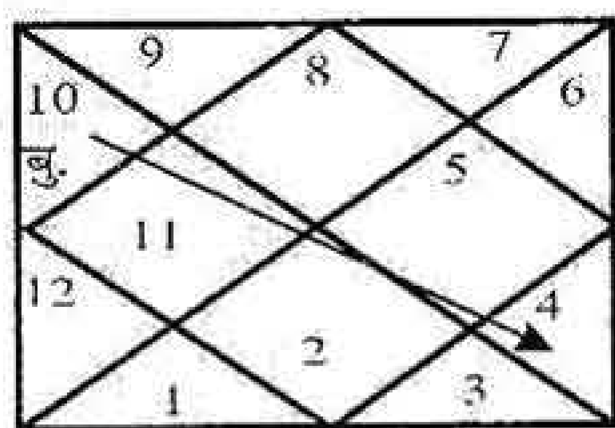
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 5 के अनुसार ऐसा जातक सदैव तीर्थयात्रा के लिए तत्पर रहता है। परन्तु उसे शूल का दर्द सदैव रहेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक धनवान होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य–**'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। द्वितीय स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्ट से देखेंगे। अष्टम स्थान बुध का स्वयं का घर है। फलतः जात बुद्धिशाली होगा। व्यापार प्रिय होगा। व्यापार में काफी धन कमायेगा। आमदनी के जरिए दो-तीन प्रकार के होंगे। जातक का समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक में रोग से लड़ने की शक्ति रहेगी एवं वह दीर्घजीवी होगा।
2. **बुध+चंद्र–**बुध के साथ चंद्रमा जातक को महाधनी बनायेगा। जातक की वाणी विनम्र एवं मिष्ट होगी।
3. **बुध+मंगल–**बुध के साथ मंगल जातक को परिश्रमी बनायेगा। ऐसा जातक कठोर परिश्रम के द्वारा अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता हैं
4. **बुध+गुरु–**बुध के साथ बृहस्पति जातक को व्यापार के द्वारा धनी बनाता है। जातक उच्च विद्या प्राप्त करेगा।
5. **बुध+शुक्र–**बुध के साथ शुक्र जातक को विवाह के बाद धनी बनायेगा।
6. **बुध+शनि–**बुध के साथ शनि जातक को पराक्रमी व सुखी व्यक्ति बनायेगा। मित्रों से धन की प्राप्ति होगी।
7. **बुध+राहु–**बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खुद को हाशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। ऐसे जातक को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।
8. **बुध+केतु–**बुध के साथ केतु धन संग्रह में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। बुध यहां तृतीय स्थान में मकर (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को भाई-बहन, माता-पिता का पूर्ण सुख मिलता है। जातक का जनसम्पर्क सघन होगा एवं जातक पराक्रमी होता है।

दृष्टि–तृतीयभावगत बुध की दृष्टि भाग्य स्थान (कर्क राशि) पर होगी ऐसे

जातक भाग्योदय शीघ्र होता है। जातक को नौकरी-व्यवसाय से उत्तम धन की प्राप्ति होती है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 5 के अनुसार लाभेश यदि तृतीय स्थान में हो तो मनुष्य सदैव तीर्थयात्रा के लिए तत्पर रहता है। पर उसे शूल (सिर दर्द) का रोग रहेगा।

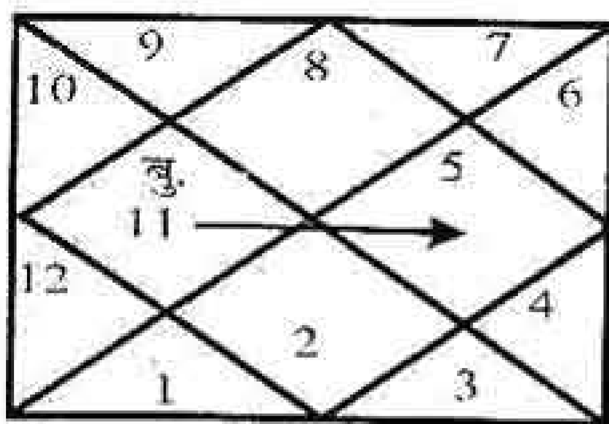
दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। तृतीय स्थान में मकरराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्यस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एवं महान् व्यक्ति होगा। उसका भाग्योदय शीघ्र होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा को भाई-बहनों से लाभ दिलायेगा। जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल उच्च का होकर जातक को पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि करेगा। जातक को भाई-बहनों का पूर्ण सुख होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति होने से जातक को व्यपार में अद्वितीय लाभ मिलेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक को बहनें अधिक होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि स्वगृही होगा। जातक के मित्र एवं परिजन सच्चे मददगार साबित होंगे।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खुद को हाशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। जातक को भाईयों का सुख नहीं होगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को अद्वितीय कीर्ति देगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में

वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां चतुर्थ स्थान



में बुध कुंभ (मित्र) राशि में है। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बनेगा। ऐसे जातक को माता-पिता, जमीन-जायदाद, वाहन, मकान एवं भूमि सुख की प्राप्ति होती है। जातक अपने परिवार कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–चतुर्थभावगत बुध की दृष्टि दशम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। ऐसे जात को राजकीय अथवा व्यवसायिक क्षेत्र में सुख-सम्मान व सफलता की प्राप्ति होती है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 4 के अनुसार लाभेश यदि चौथे स्थान में हो तो मनुष्य अनेक प्रकार से सुखी होता है। उसके पुत्र भी होते हैं। जातक ईश्वर में विश्वास रखने वाला आस्तिक बुद्धि का व्यक्ति होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

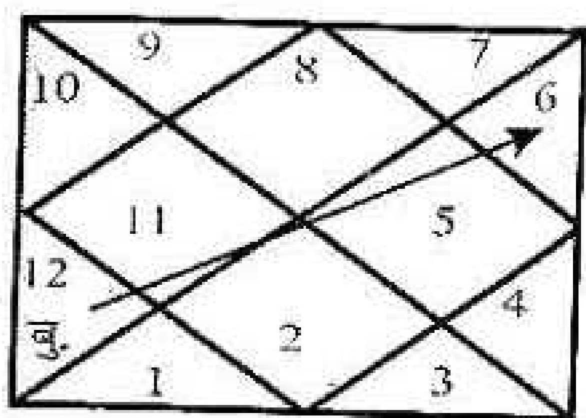
बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। चतुर्थ स्थान में कुंभराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि राज्य स्थान (दशम भाव) पर रहेगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। माता-पिता के सुख से युक्त होगा। मां की सम्पत्ति मिलेगी, इसके लिए चंद्रमा की स्थिति भी देखनी होगी पर वाहन सुख, उत्तम मकान का सुख जातक को अवश्य मिलेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा माता का सुख एवं सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। जातक के पास अच्छे वाहन होंगे।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल होने से जातक को भाईयों का सुख मिलेगा। परिश्रम का लाभ होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को महाधनी बनायेगा। जातक उच्च शिक्षित होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र पत्नी सुन्दर देगा। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि 'शश योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु वाहन दुर्घटना देगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलत: परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अत: बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां पंचम स्थान में बुध नीच का है। मीन रशि के 15 अंशों में बुध परमनीच का हो जाता हैं ऐसे जातक को उच्च शैक्षण्कि उपाधि एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मलती है पर उससे जातक संतुष्ट नहीं होता। व्यापार में लाभ मिलता है। हाथ में लिए गये कार्य में सफलता मिलती है पर मानसिक असंतोष रहता है।

दृष्टि–पंचमस्थ बुध की दृष्टि एकादश स्थान अपने ही घर कन्या राशि पर होगी। ऐसे जातक को धन-सम्पत्ति का बहुत लाभ होता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 4 के अनुसार लाभेश यदि पांचवें स्थान में हो तो मनुष्य अनेक प्रकार से सुखी होता हैं उसे पुत्र सुख भी उत्तम होता है। जातक धार्मिक एवं ईश्वरीय शक्ति में विश्वास रखने वाला होता हैं

दशा–बुध की दशा- अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को विद्या सुख मिलेगा। ज्ञानार्जन होगा। व्यापार में लाभ एवं गृहस्थ जीवन में संतान सुख मिलेगा।

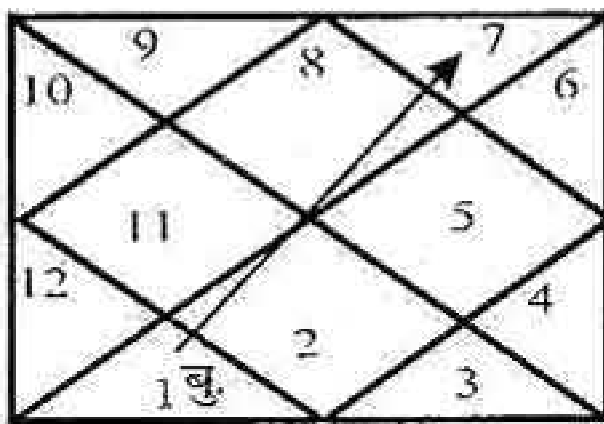
बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। पंचम स्थान में मी नराशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह लाभस्थान को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक बुद्धिशाली होगा, शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक को पुत्र व कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक ज्योतिष, तंत्र व गूढ़ रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा। जातक धनवान होगा एवं समाज के लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तियों में अग्रगण्य होगा।

2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा उत्तम संतति का सुख देगा। जातक की कल्पना शक्ति तीव्र होगी। विद्या में थोड़ा संघर्ष रहेगा। पर डिग्री मिलेगी।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल प्रथम संतति को नष्ट करेगा। जातक टैक्नीकल व्यक्ति होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं बुद्धिशाली व सुखी होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक का पराक्रम बढ़ायेगा। भौतिक सुख संसाधनों की वृद्धि करेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनाता है। ऐसा जातक खुद को हाशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। विद्या व संतान में निश्चित रुप से बाधा आयेगी।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु विद्या अधूरी देगी।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलत: परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अत: बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां छठे स्थान में बुध मेष का है। बुध के कारण जहां **'लाभभंग योग'** बना वही अष्टमेश छठे जाने से 'सरल नामक **विपरीत राजयोग'** भी बना। ऐसा जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा। उसे सभी भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होती है। परन्तु जातक ऋण, रोग व शत्रु से परेशान रहता है।

दृष्टि–षष्टम भावगत बुध की दृष्टि व्ययभाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक खर्चील स्वभाव का होता है। गुप्त बीमारी को लेकर कोर्ट-कचहरी इत्यादि में जातक का पैसा खर्च होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 6 के अनुसार ऐसा जातक परदेश रहने वाला, नौकरी पेशा से उदरपूर्ति करने वाला एवं सुखी होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

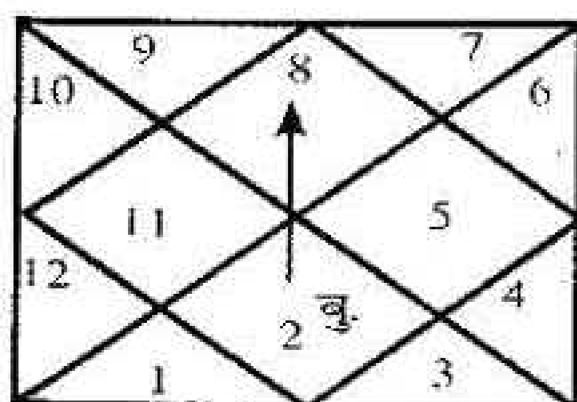
बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। छठे स्थान में मेषराशिगत यह युति वसतु दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के

साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। धनवान होगा परन्तु सूर्य छठे जाने से '**राज्यभंग योग**' तथा बुध छठे जाने से '**लाभभंग योग**' बना। अत: जातक को व्यापार से धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। सरकारी नौकरी के अवसर कम मिलेंगे अथवा सरकार द्वारा मिलने वाला लाभ अटक जायेगा। अष्टमेश का छठे जाने से '**सरल योग**' बनेगा। जातक दीर्घजीवी होगा एवं जातक समाज का अग्रगण्य, लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक के भाग्योदय में रुकावटें आयेगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल '**विपरीत राजयोग**' के साथ जातक को धनी, मानी, स्वाभिमानी बनायेगा। जातक के गुप्त शत्रु होंगे।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं 'संतति हीन योग' बनायेगा। जातक को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक को गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक की पीठ पीछे निन्दा होगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार दूसरों को महामुख समझता है। जातक शत्रुओं का मान-मर्दन करने में सक्षम होगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु उदार विकार एवं पेट संबंधित रोग देगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलत: परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अत: बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां सप्तम स्थान में बुध वृष राशि में है। बुध के कारण '**कुलदीपक योग**' बन रहा है। ऐसा जातक सुन्दर, आकर्षक, व्यवहार कुशल, सभ्य एवं शिष्टाचार युक्त होता है। जातक की पत्नी सुन्दर होती है। जातक स्वयं खुशमिजाजी एवं प्रतिभासम्पन्न होता है। तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के सामन रोशन करता है।

दृष्टि–सप्तमभावगत बुध की दृष्टि लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसा जातक परिश्रमी होता है तथा उसे परिश्रम का मीठा फल भी मिलता है।

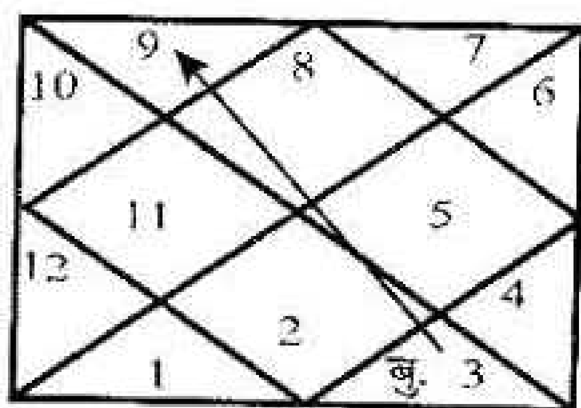
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 7 के अनुसार यदि लाभेश सातवें स्थान पर हो तो उस जातक का स्त्री की मृत्यु के सामने होती है। जातक विद्वान होते हुए मुर्ख जैसा व्यवहार करता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। सातवें स्थान पर वृषराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। धनवान होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक को अल्प प्रयत्न से बहु-लाभ होगा। ऐसा जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा। बुध केन्द्रवर्ती होने के कारण '**कुलदीपक योग**' बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नामक दीपक के समान रोशन करेगा।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ उच्च का चंद्रमा '**यामिनीनाथ योग**' बनायेगा। जातक का सौभाग्यशाली होगा। पत्नी रुप की रानी होगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल विवाह में विलम्ब करायेगा। परन्तु पत्नी से तकरार भी कराता रहेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति होने से जातक विवाह के बाद धनी होगा। पुत्र की प्राप्ति के बाद और अधिक धनी होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को पराक्रमी एवं सुख-संसाधनों से परिपूर्ण जीवन देगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा। ऐसा जातक खुद को हाशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। जातक के पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु सुख को विवादित करेगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलत: परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अत: बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां अष्टम स्थान में बुध मिथुन राशि का स्वगृही होगा। बुध इस स्थिति से जहां '**लाभभंग योग**' बना। वहीं अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से 'सरल नामक **विपरीत राजयोग** भी बना। ऐसा जातक धनी-मानी होगा। उसे भौतिक सुख-सुविधाएं सहज में प्राप्त होंगी। व्यापार में लाभ होगा। पर जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

दृष्टि–अष्टम भावगत बुध की दृष्टि धन स्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक का धन शुभ कार्यों में खर्च होगा। जातक व्यापार द्वारा धन अर्जित करेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 7 के अनुसार लाभेश यदि आठवें हो तो ऐसे जातक के स्त्री की मृत्यु उसके सामने हो जाती है। ऐसा जातक विद्वान् होते हुए भी मूर्खवत् आचरण करता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश है। आठवें स्थान में मिथुनराशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य आठवें होने से '**राजभंग योग**' तथा बुध आठवें होने से '**लाभभंग योग**' बना परन्तु अष्टम स्थान में स्वगृही होने से '**सरल योग**' बना। फलत: यह योग यहां मिले-जुले फल देगा। जातक बुद्धिमान होगा, धनवान होगा। '**सरल योग**' के कारण दीर्घजीवी होगा परन्तु भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। व्यापार में घाटा एवं गुप्त बीमारी से परेशानी रहेगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं 'संतान हीन योग' बनायेगा। जातक धन व संतान को लेकर चिंतित रहेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करायेगा। जातक को दाम्पत्य समरसता का सुख नहीं मिलेगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखभंग योग**' बनायेगा। जातक को पीछ पीछे निन्दा होगी।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा। ऐसा जातक खुद को हाशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। ऐसे जातक को गुप्त रोग होगा। मधुमेह होगा।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु गुप्त बीमारी देगा। स्वास्थ्य में गिरावट एवं मध्यम आयु देगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में

वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां नवम स्थान में बुध कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। जातक को जाति-समाज व राजनीति में उच्च पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक धनी व यशस्वी होगा।

दृष्टि–नवम भावगत बुध की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहन, मित्रों से लाभान्वित होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 8 के अनुसार–'लाभेशे दशमे धर्मे राज्यपूजो धनाधिपः' ऐसा मनुष्य राजा से सम्मान पाने वाला। बड़ा अधिकारी, सेनापति, कोषाध्यक्ष व धनाधित होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। नवम स्थान में कर्कराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान होगा, भाग्यशाली होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को परिजनों, मित्रों की मदद समय-समय पर मिलती रहेगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक का भाग्योदय शीघ्र करायेगा। जातक व्यापार द्वारा विपुल धन आर्जित करेगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक पुरुषार्थ परिश्रम का लाभ देगा। भाईयों का सुख देगा।

4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को महाधनी बनायेगा। जातक विद्यावान् एवं पुत्रवान होगा।

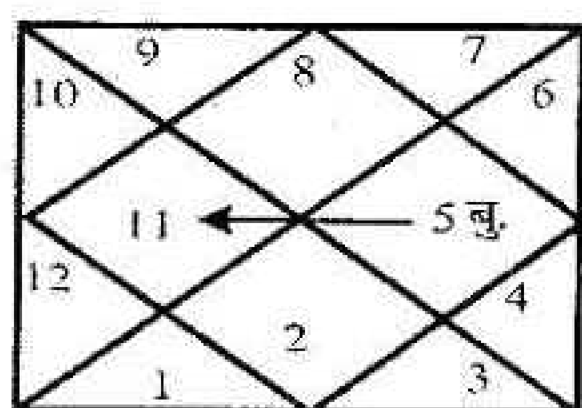
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र विवाह के बाद भाग्योदय करायेगा। जातक व्यापार द्वारा धर्नाजन करोगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि मित्रों से धन दिलायेगा। जातक को धन यश व प्रतिष्ठा मिलेगी।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खुद को हाशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। भग्योदय राहु जड़त्व बुद्धि के कारण रुकावट देगा।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु भाग्योदय हेतु हल्का संघर्ष करायेगा। फिर सफलता देगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां दशम स्थान में बुध यहां सिंह राशि में है। बुध उच्चाभिलाषी है तथा यहां **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि कर रहा है। ऐसे जातक को उच्च विद्या, बुद्धि बल से लाभ, समाज में यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। पिता का सुख मध्यम। जातक के स्वयं का मकान अवश्य होगा। खुद का व्यापार भी होगा।

दृष्टि–दशमभावगत बुध की दृष्टि चतुर्थ स्थान (कुंभराशि) पर होगी। जातक को उत्तम वाहन का सुख मिलेगा।

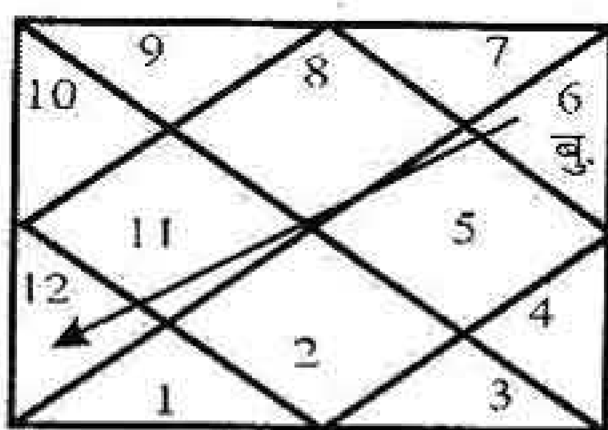
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 8 के अनुसार लाभेश यदि दशम भाव में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति राजा से सम्मान पाने वाला, बड़ा अधिकारी, सेनपाति, कोषाध्यक्ष व धनाधिप होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। धन की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। दशम स्थान में सिंहराशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा तथा **'रविकृत राजयोग'** की सृष्टि करेगा। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। बहुत उच्चाभिलाषी होने से जातक महत्वकांक्षी होगा। फलत: ऐसा जातक बुद्धि बल से धन कमाने वाला, राज्य (सरकार) में ऊंचा पद, प्रतिष्ठा पाने वाला, घर का दो मंजिला मकान एक से अधिक वाहनों का वमी होगा। जातक का पराक्रम तेज होगा।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को राजनीति में लाभ व पद दिलायेगा। कोर्ट-कचहरी में विजय होगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को एक से अधिक वाहन देगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को महाधनी बनायेगा। जातक अध्ययन-अध्यापन व आध्यात्मिक लाईन में रुचि रखेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक के विवाह के बाद समाज में ऊंचा पद व प्रतिष्ठा दिलायेगा। व्यापार से लाभ होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को 'करोड़पति' बनायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खुद को हाशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। राज्य से दण्ड संभव है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु राज-दरबार में पराजय एवं कोर्ट-कचहरी में हार दिलायेगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में



वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलत: परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अत: बुध यहां अशुभफल ही देगा। एकादश स्थान में बुध उच्च का है। कन्या राशि के 15 अंशों में बुध परमोच्च का कहलाता है। ऐसे जातक को उच्च पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। धन-सम्पत्ति, स्वास्थ्य, आयु की वृद्धि होगी। जातक का दिमाग कम्प्यूटर की तरह तेज होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत बुध की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को उत्तम शिक्षा व उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।

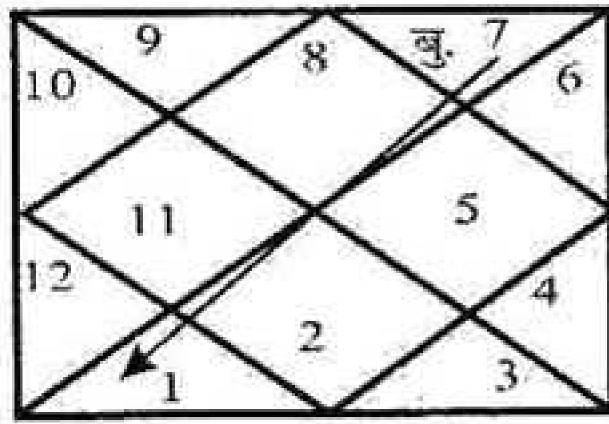
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 1 के अनुसार लाभेश यदि लाभस्थान में हो तो जातक प्रखर वक्ता होता है। कवित्व शक्ति से परिपूर्ण, प्लानिंग मास्टर होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को उत्तम व्यापार-व्यवसाय की प्राप्ति होगी। जातक धनी होगा। बुध की दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। एकादश स्थान में कन्याराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर बुध उच्च का होगा। दशमेश एवं बलवान लाभेश की यहां युति राजयोग कारक है। जातक बुद्धिमान एवं महा-धनवान व्यक्ति होगा। जातक उद्योगपति होगा। भाग्यशाली होगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। ऐसा जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को बड़ा उद्योगपति बनायेगा। पर व्यापार में संघर्ष भी कराता रहेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को महाधनी बनायेगा। जातक को उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को सुख-संसाधनों से परिपूर्ण जीवन देगा। मित्र लोग मदद में तैयार खड़े मिलेंगे।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खुद को हाशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। ऐसे जातक को चलते व्यापार व उद्योग को एक बार बन्द करना पड़ता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को व्यापार में परेशानी देगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में



वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलत: परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अत: बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां द्वादश स्थान में बुध तुला (मित्र) राशि में है। बुध की इस स्थिति से '**लाभभंग योग**' बना। वही षष्टमेश तरीके बुध द्वादश स्थान में होने से 'सरल नामक **विपरीत राजयोग**' भी बना। ऐसा जातक धनी, मानी होगा। उसे धन-सम्पत्ति, जमीन-जायदाद, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है पर वांछित यश नहीं मिलेगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत बुध की दृष्टि छठे स्थान (मेष राशि) पर होगी। ऐसे जातक के गुप्त व प्रकट शत्रु बहुत होंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 2 के अनुसार लाभेश व्यय भाव में हो तो व्यक्ति म्लेच्छ या नीच जाति के साथ रहने वाला, बड़ा कामी एवं अनेक स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। द्वादश स्थान में तुलाराशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर सूर्य नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य के बारहवें जाने से '**राजभंग योग**' बनेगा तथा बुध बारहवें होने से '**लग्नभंग योग**' बनेगा। अष्टमेश के बारहवें जाने से '**सरल योग**' भी बनता है। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। '**सरल योग**' के कारण वह दीर्घजीवी होगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठि एवं गणमान्य व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा '**भाग्यभंग योग**' बनाता है। जातक का भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनाता है। जातक को आर्थिक परेशानी व दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करायेगा। जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं **सुखहीन योग**' बनाता है। जातक की पीठ पीछे निन्दा व बुराई होगी।

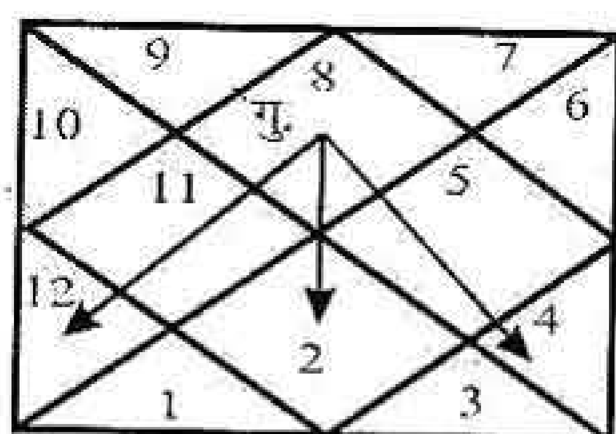
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा। ऐसा जातक खुद को हाशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। जातक को यात्रा में भय मिलेगा। बुरे सपने आयेंगे।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु आध्यात्म में रुचि देगा। धार्मिक यात्राएं होगी।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति प्रथम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। प्रथम स्थान में बृहस्पति वृश्चिक (मित्र) राशि में है। बृहस्पति के कारण **'केसरी योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** बना। ऐसा जातक स्वस्थ शरीर एवं दीर्घायु वाला होता है। व्यक्तित्व आकर्षक, वाणी में आत्मीयता का मिठास होता है। जातक आध्यात्मक जीवन में रुचि रखता है। पुरानी मान्यताओं एवं ईश्वर के प्रति विश्वास रखता है। जातक धनवान होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि), सप्तम स्थान (वृष राशि) एवं भाग्य भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक को संतान सुख श्रेष्ठ, पत्नी सुख श्रेष्ठ एवं भाग्य का सुख श्रेष्ठ होता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 7 के अनुसार पंचमेश यदि लग्न में हो तो व्यक्ति चुगलखोर तो होता ही है साथ में बड़ा भारी कंजूस, कृपण, मक्खीचूस होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में उन्नति होगी। पुत्र संतान एवं धन की प्राप्ति होगी। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को जबरदस्त राजयोग देगा। ऐसा जातक धनी होगा। उसका राजनीति में प्रभाव होगा।

2. **बृहस्पति+चंद्र**—वृश्चिकलग्न के प्रथम भाव मे यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है जो पूर्णतः शुभफलदायक है। चंद्रमा यहां नीच का होगा। पर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव, सप्तम भाव एवं नवम भाव पर होगी। फलतः जातक विद्यावान होगी। पत्नी सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक की गिनती सफल एवं भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी।

3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ मंगल '**रुचक योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होगा।

4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध होने से जातक को विद्या लाभ होगा। उसको उत्तम पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

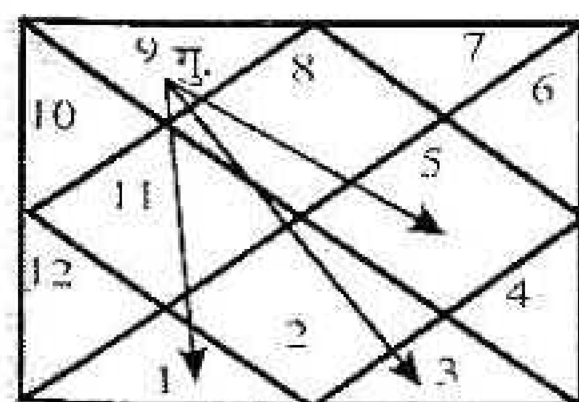
5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को सुन्दर, सुशील व सभ्य जीवन साथी देगा।

6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि जातक को पराक्रम, उसके पुरुषार्थ से बढ़ेगा। उसे जीवन में सभी भौतिक सुख-सुविधाएं सहज में प्राप्त होगी।

7. **बृहस्पति+राहु**—यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में है। बृहस्पति यहां नीच राशि में हैं तो राहु नीच राशि में होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' एवं '**केसरी योग**' बना रहा है। ऐसा जातक जिद्दी, हठी व लड़ाकू होगा। फिर भी एक सफल राजनीतिज्ञ व्यक्ति होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु जातक को उन्नति में संघर्ष देगा पर एक कामयाब व्यक्ति बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। बृहस्पति द्वितीय स्थान में स्वगृही होगा। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब-परिजनों का विशेष प्रेमी होता है। मिष्टभाषी, सभ्य एवं हितकारी वचन बोलता है। व्यक्ति धनवान होता है। ऐसा जातक सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक जिम्मेदारियों का पालन बखूबी से करता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (मेष राशि), अष्टम स्थान (सिंह राशि) एवं दशम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। जातक के शत्रु नष्ट होते हैं। जातक दीर्घजीवी होता है तथा राज्य (सरकार) से मान-सम्मान प्राप्त करता है।

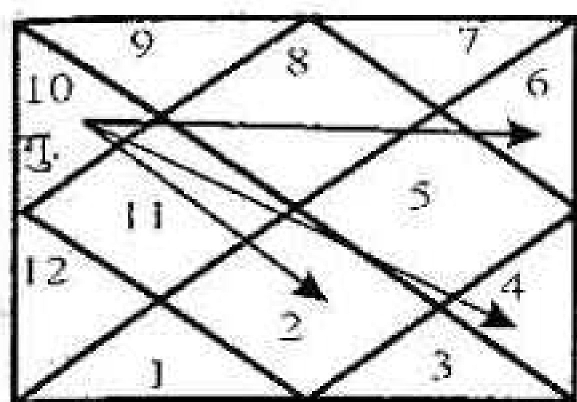
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 4 के अनुसार पंचमेश यदि द्वितीय स्थान में हो तो व्यक्ति धनवान तो होता है पर उसके बहुत सी लड़कियां होंगी।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक को धन की प्राप्ति होगी। राजकीय सम्मान, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को महाधनी बनायेगा। जातक आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न, तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होगा। **'राजमूल धनयोग'** के कारण जातक को सरकार से पैसा मिलेगा।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न के धनुराशि के अंतर्गत द्वितीयभाव में हो रही यह युति, वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा इसकी दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थान एवं राज्य (दसवें) स्थान पर होगी। फलतः आप ऋण-रोग एवं शत्रु से बचे रहेंगे। आपका भाग्योदय शीघ्र होगा। आपको उच्च शैक्षणिक डिग्री भी प्राप्त होगी तथा आपकी आयु भी लंबी होगी। यह योग आपके लिए अत्यंत शुभफलदायक है।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक भूमि का अधिपति, गावं का मुखिया बनेगा। जातक अपनी मेहनत से आगे बढ़ेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को विनम्र एवं धार्मिकता से ओतप्रोत वाणी एवं धन देगा। जातक शत्रुओं से भी पैसा कमायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'कलत्रमूल धनयोग'** बनायेगा। ऐसे जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि होने से **'मातृमूल धनयोग'** एवं 'मित्रमूल धनयोग' बनेगा। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। भाईयों एवं मित्रों से भी धन मिलेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में है। बृहस्पति यहां स्वगृही तो राहु अपनी नीचराशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना। ऐसे व्यक्ति धनवान होगा, पुत्रवान होगा। परन्तु धन जितनी तेजी से आयेगा, उतनी तेजी से खर्च होता चला जायेगा। जातक को संतति संबंधी चिंता रहेगी।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु धनसंग्रह में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति तृतीय स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। यहां तृतीय स्थान में बृहस्पति नीच का होगा। मकरराशि के पांच अंशों में परमनीच का होगा। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। उसे समाज़ में पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक ऐश्वर्य सम्पन्न होगा, प्रभावशाली होगा। जातक यशस्वी होगा। परिजनों का प्रिय होगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि), नवम भाव (कर्क राशि) एवं एकादश स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक का गृहस्थ जीवन उत्तम होगा। जातक भाग्यशाली होगा, उसे धन व पद की प्राप्ति होगी। जातक धनी होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 7 के अनुसार पंचमेश यदि तृतीय स्थान में हो तो व्यक्ति चुगलखोर तो होता ही है। साथ में बड़ा भारी कंजूस, कृपण, मक्खीचूस होता है।

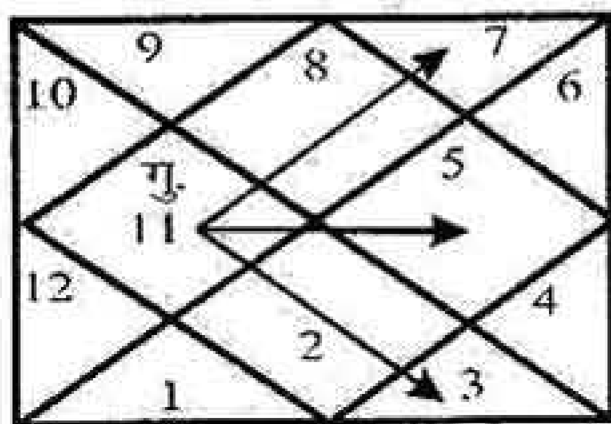
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक उन्नति करायेगी। उसे गृहस्थ सुख देगी। जातक को रोजी-रोजगार एवं भाग्य उन्नति के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को महान् पराक्रमी बनायेगा। जातक को छोटे भाई का सुख नहीं होता।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न में तृतीय भाव में मकर राशि में बृहस्पति+चंद्र की युति हो रही हैं यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। तृतीय स्थान में बृहस्पति नीच का होगा। इसकी दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थान एवं दशम भाव पर होगी। फलत: जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। आपकी आयु दीर्घ होगी। आप अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम रहेंगे। राज्य (सरकार) कोर्ट-कचहरी में भी जातक को विजय मिलेगी। जातक की गिनती योग्य एवं सफल व्यक्तियों में होगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल उच्च का जातक को प्रबल पराक्रमी बनायेगा। जातक अपने शत्रुओं के लिए जबरदस्त आंतकवादी व्यक्ति होगा। '**नीचभंग योग**' के कारण जातक राजा के समान वैभवशाली होगा।

4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को भाई-बहनों का सुख देगा। समाज में प्रतिष्ठा देगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र व्यक्ति को ससुराल या पत्नी से धन व सम्मान दिलाता रहेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है। बृहस्पति यहां नीच का तो राहु सम राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। परन्तु सगे भाई-बहन, रिश्तेदारों से कम पटेंगे। मित्र ठीक जरुरत के वक्त पर धोखा देंगे।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक को जाति, समाज व मित्रों में कीर्ति दिलायेगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति चतुर्थ स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। चतुर्थ स्थान में बृहस्पति कुंभ (सम) राशि में है। बृहस्पति के कारण **'केसरी योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** बना रहा है। जातक को जीवन में सभी सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक को माता-पिता का सुख मिलेगा। जातक पैतृक मकान में रहेगा। जातक का निजी वाहन होगा।

दृष्टि–चतुर्थभावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम स्थान (मिथुन राशि), दशम भाव (सिंह राशि) एवं द्वादश भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक दीर्घजीवी होगा। राज्य सरकार में ऊंचा पद मिलेगा। जातक परोपकारी होगा। शुभ कार्यों में धन का खर्च होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 8 के अनुसार पंचमेश चदि चतुर्थ स्थान में हो तो जातक को मातृसुख बहुत समय तक मिलता है। जातक धनवान तो होगा पर राज्य संबंध में उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में भौतिक सुख, संसाधनों की वृद्धि होगी। नौकरी-रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। बृहस्पति की दशा शुभ जायेगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य पिता की सम्पत्ति दिलायेगा। जातक के पास पुश्तैनी जायदाद के अलावा खुद का पुरुषार्थ से बनाया हुआ बड़ा मकान भी होगा।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न के चतुर्थ भावगत कुंभराशि में यह युति हो रही हैं यह वस्तुत: भाग्येश चद्रंमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। चतुर्थ भाव में ये दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होकर अष्टम स्थान, दशम भाव एवं व्ययभाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक दीर्घायु होगा। उसका दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। राज्यपक्ष (कोर्ट-कचहरी) में विजय मिलेगा। शुभ खर्च जातक के हाथ से होगा। जिससे जातक को यश मिलेगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति कें साथ मंगल जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुविधाएं, भूमि, भवन एवं वाहन सुखों में वृद्धि करायेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध व्यापार से लाभ है। एवं जातक को पूर्ण विद्या Educational Degree दिलायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र विवाह से धन, पत्नी से धन लाभ करायेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि '**शशयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। बृहस्पति यहां समराशि में है तो राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होने से '**चाण्डाल योग**' बना। बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' बना। ऐसे जातक को माता-पिता का सुख कमजारे होगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु भौतिक सुख-सुविधाओं में बाधक का कार्य करेगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति पंचम स्थान में

9	8	7
10		6
11		5
12 गु.	2	4
1		3

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। यहां पंचम स्थान में बृहस्पति स्वगृही होगा। ऐसा जातक बुद्धिमान व धनवान होगा। जातक

भाग्यवान्, धार्मिक व यशस्वी होता है। उसे उच्च पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। वैसे तो जातक के पांच पुत्र होने चाहिए पर जातक पारिजात अध्याय 13/श्लोक 30 के अनुसार वृश्चिकलग्न में स्वगृही बृहस्पति अल्प संतति देगा। परन्तु तुला लग्न में कुंभ का बृहस्पति पंचम में हो तो संतति होगी ही नहीं।

दृष्टि–पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्यभवन (कर्क राशि), लाभ स्थान (कन्या राशि) एवं लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा। उसे व्यापार में लाभ होगा तथा परिश्रम का मीठा फल भी मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 1 के अनुसार–सुतेश: पंचमे यस्य, तस्य पुत्रों न जीवति:, सुतेश स्वयं पंचम स्थान में स्वगृही हो तो उसका प्रथम पुत्र जीवित नहीं रहता, उसके सामने ही मर जाता है।

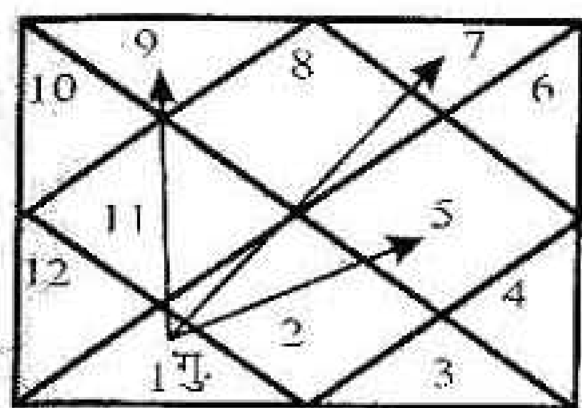
दशा–बृहस्पति की दशा–अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक बृहस्पति की की दशा में धन कमायेगा। पद-प्रतिष्ठा, सामाजिक व राजनैतिक महत्व बृहस्पति की दशा में बढ़ेगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य **'राजमूल धनयोग'** बना रहा है। जातक को सरकार में ऊंची नौकरी-पद मिलेगा। सरकार से धन मिलेगा। पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न में पंचम भाव से युति मीनराशि में रही है। यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। यह शुभफलकारी है। क्योंकि बृहस्पति यहां स्वगृही होकर भाग्यस्थान, लाभस्थान एवं लग्नस्थान को देख रहा है। फलत: आपका भाग्योदय शीघ्र होगा। व्यापार में आपको लाभ होगा तथा विशेष प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण रहेंगे। आपके व्यक्तित्व का चहुमुंखी विकास इस चंद्र+बृहस्पति के कारण होगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'शत्रुमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को शत्रु से रुपया मिलेगा। जमीन से रुपया मिलेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को व्यापार से धन दिलायेगा। संतान से धन दिलायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'कलत्रमूल धनयोग'** बनायेगा। ऐसे जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'मातृमूल धनयोग'** एवं **'भ्रातृमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को माता की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी। भाईयों एवं मित्रों से धन मिलेगा।

7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में हैं। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा राहु अपनी नीच राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। जातक को पांच पुत्रों का योग बनता है परन्तु राहु पुत्र सुख तोड़ेगा। जातक धनवान होगा। विद्यावान होगा। परन्तु राहु विद्या का सही लाभ नहीं होने देगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु संतान उत्पत्ति में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति षष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। यहां छठे स्थान में बृहस्पति मेष (मित्र) राशि में है। बृहस्पति के कारण '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' की सृष्टि हुई। ऐसे व्यक्ति ऊर्जावान होते है पर महत्वकांक्षाओं व सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति भारी संघर्ष के बाद होती हैं धन संबंधी चिंता एवं संतान संबंधी चिंता जीवन पर्यन्त रहेगी।

दृष्टि–छठे भाव में स्थित बृहस्पति की दृष्टि दशम भाव (सिंह राशि), द्वादश भाव (तुला राशि) एवं धन भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को राजद्वार से सम्मान मिलेगा। जातक का शुभ कार्यों में धन खर्च होगा। जातक धनी होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 2 के अनुसार पंचमेश यदि छठे स्थान में हो तो लड़का अपने पिता से शत्रुओं जैसा व्यवहार करता है। जातक का पिता दूसरा लड़का गोद में लेता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक भारी उन्नति को प्राप्त करेगा। दशा संघर्ष के बाद सफलता देगी, अत: मिश्रित फलकारी होगी।

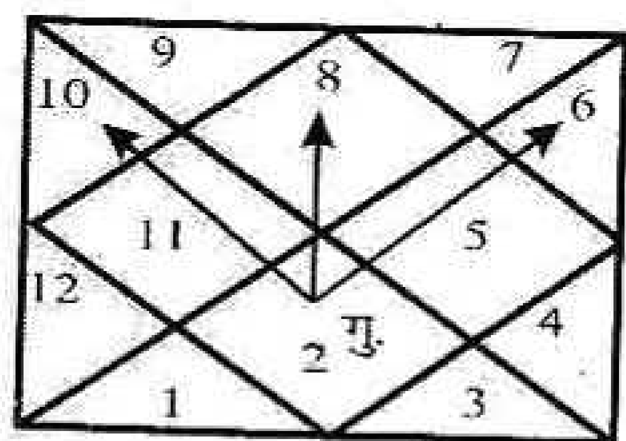
बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को सरकारी नौकरी प्राप्त करने हेतु बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। राजकीय सहयोग नहीं मिल पायेगा।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–'भोजसंहिता के अनुसार वृश्चिकलग्न में छठे स्थान में यह युति मेषराशि में हो रही है। यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति+चंद्र षष्टमस्थ होने से '**धनहीन योग**',

'**संतानहीन योग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' की सृष्टि हुई है। षष्टमस्थ बृहस्पति और चंद्रमा भाग्यभवन, लाभस्थान एवं लग्नस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: शत्रु नाश होंगें, व्यापार-व्यवसाय में लाभ-हानि का उपक्रम चलता रहेगा। इस शुभ योग के कारण जातक को कोई गंभीर नुकसान नहीं पहुंचेगा।

3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी व अभमानी होगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनाता है। जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' व '**सुखभंग योग**' बनाता हैं जातक के पीठ पीछे उसकी निन्दा होगी।
7. **बृहस्पति+राहु**—यहां दोनों ग्रह मेष राशि में है। बृहस्पति यहां मित्र राशि में तो राहु सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। बृहस्पति के कारण यहां '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनेगा। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। प्रारंभिक विद्या में बाधा एवं पुत्र संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।
8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु शत्रुओं का नाश करने में सहायक होगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति सप्तम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। बृहस्पति यहां सप्तम स्थान में वृष (शत्रु) राशि में है। बृहस्पति के कारण '**केसरी योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' बनेगा। ऐसे जातक को पत्नी सुन्दर व श्रेष्ठ विचारों वाला मिलेगी। गृहस्थ सुख उत्तम, संतान सुख उत्तम। परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक पराक्रमी, धनवान एवं यशस्वी होगा। जातक की राय सभी लोग मानेंगे।

दृष्टि—सप्तमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लाभस्थान (कन्या राशि), लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) एवं पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। जातक को व्यापार में

लाभ होगा। परिश्रम का फल मिलेगा। जातक का जनसम्पर्क सघन होगा। जातक लोकप्रिय व्यक्ति होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 3 के अनुसार पंचमेश यदि सातवें स्थान पर हो तो ऐसा जातक दूसरे से अधिक सम्मान चाहता है तथा सभी धर्मों में समान आस्था रखता है।

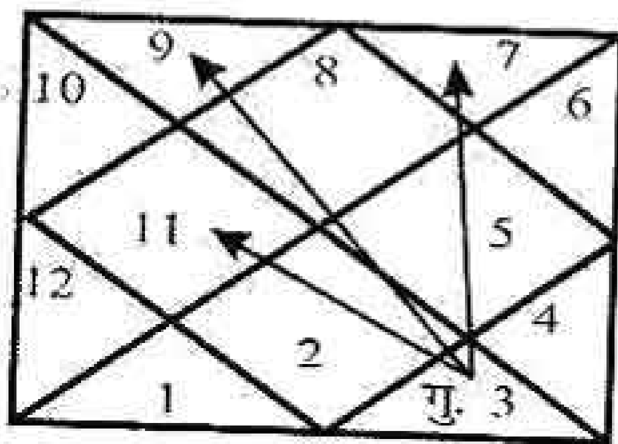
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में सर्वांगीण विकास होगा। मित्रों से लाभ, नवीन पराक्रम का उदय होगा। व्यापार में लाभ होगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य विवाह के बाद जातक को नौकरी, विद्या, धन व तरक्की दिलायेगा।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सप्तमस्थ बृहस्पति+चंद्र वृषराशि में होंगे। यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति हैं यहां चंद्रमा उच्च का होगा। '**गजकेसरी योग**' की केन्द्रगत यह स्थिति शक्तिशाली है जो क्रमशः '**कुलदीपक योग**' एवं '**यामिनीनाथ योग**' की सृष्टि कर रहे हैं। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लाभस्थान, लग्नस्थान एवं पराक्रम स्थान पर होगी। फलतः जातक का व्यक्तित्व का विकास द्रुतगति से होगा, जातक के मित्र सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित होंगे। जातक का व्यापार-व्यवसाय में आशातीत लाभ होते रहेंगे।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल '**लग्नाधिपति योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम पूर्वक किये गये पुरुषार्थ का मीठा फल मिलेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को व्यापार द्वारा धन देगा। बुद्धि बल से जातक आगे बढ़ेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व धनी होगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति करायेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह वृष राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु उच्च राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बनेगा। बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' व '**केसरी योग**' भी बन रहा है। जातक धनी होगा। ऐश्वर्यशाली होगा पर पति-पत्नी के मध्य वैचारिक मतभेदों से द्वंद चलता रहेगा।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु विवाह सुख में विच्छेदक है।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति अष्टम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। यहां अष्टम स्थान में बृहस्पति मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। बृहस्पति की इस स्थिति से **'धनहीन योग'** एवं **'संतानहीन योग'** बनता है। ऐसे जातक को सामाजिक मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति तो होगी पर अर्थाभाव रहेगा। धन व संतान की प्राप्ति हेतु विविध पुरुषार्थ करने पड़ेगे।

दृष्टि–अष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि द्वादश भाव (तुला राशि), धन भाव (धनु राशि) एवं चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) पर होगी। जातक धनवान होगा पर धन शुभ कार्यों में खर्च होगा। जातक को भौतिक सुख-संसाधनों की प्राप्ति होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 4 के अनुसार पंचमेश यदि आठवें स्थान में हो तो मनुष्य धनवान तो होता ही है पर उसके बहुत सारी लड़कियां होगी।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य आठवें स्थान में होने से **'राजभंग योग'** बनेगा। फलत: जातक को सरकारी नौकरी प्राप्त करने में दिक्कतें आयेगी। जीवन में राजभय बना रहेगा।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न में अष्टमस्थ, बृहस्पति+चंद्र की युति मिथुन राशि में होगी। यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। 'भोजसंहिता' के अनुसार यहां चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है। यहां बैठने से **'धनहीन योग'**, **'संतानहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** की सृष्टि होती है। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय स्थान, धनस्थान एवं सुख स्थान को देखते हैं। फलत: जातक को धन की हानि, सुख साधन की कमी अखरेगी। इसके साथ ही बढ़े हुए खर्च के कारण जातक को चिंता बनी रहेगी परन्तु इस शुभयोग के कारण जातक को सभी प्रकार की चिन्ताओं से मुक्ति मिल जाएगी।

3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी-मानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।

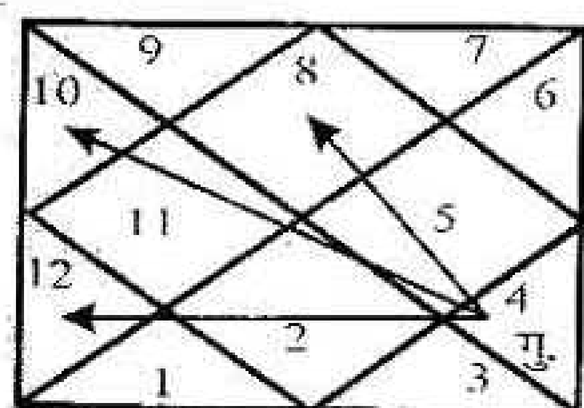
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक के दाम्पत्य सुख में कमी रहेगी।

6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक की पीठ पीछे निन्दा होती रहेगी।

7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' भी बनेगा। ऐसे जातक को आर्थिक विषमताएं सहन करनी होगी। विद्या में बाधा एवं पुत्र संतान को लेकर चिंता जीवन पर्यन्त बनी रहेगी।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु गुप्त रोग देगा। जातक कर्जदार होगा। जातक की आयु मध्यम होगी।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति नवम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। बृहस्पति यहां नवम स्थान में उच्च का होगा। कर्क राशि के पांच अंशों में बृहस्पति परमोच्च का होता है। ऐसे जातक को धन, घर, जमीन-जायदाद, माता-पिता का सुख, स्त्री-संतान का सुख, कुटुम्ब-परिवार का सुख पूर्ण रुप से मिलेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऊंची नौकरी या ऊंचे व्यापार-व्यवसाय की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–नवमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लग्नस्थान (वृश्चिक राशि), पराक्रम स्थान (मकर राशि) एवं पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक लोकप्रिय व्यक्तित्व का धनी होगा। जातक को उच्च विद्या व संतति की प्राप्ति होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 5 के अनुसार-सुतेश नवमे कार्ये पुत्रो भूपसमो भवेत्' पंचमेश यदि नवम स्थान में हो तो जातक राजा के समान

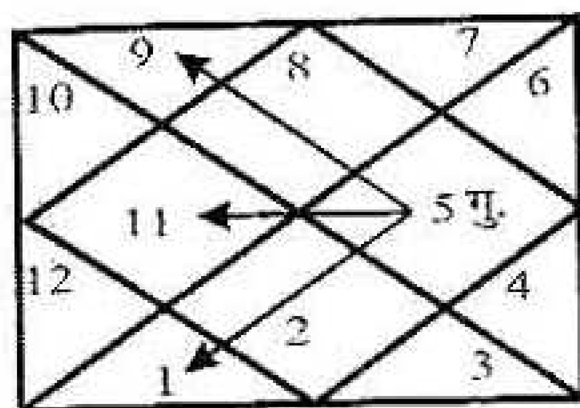
ऐश्वर्यशाली, राज्य में बड़ा अधिकारी, बड़ा ग्रंथकर्त्ता या पत्रकार होता है। कुल का नाम रोशन करता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की किस्मत चमक जायेगी। जातक का मान-सम्मान मिलेगा। नित-नूतन पराक्रम बढ़ेगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को उत्तम राजयोग देगा। जातक को सरकारी नौकरी लगेगी। सरकार से सम्मान व राजकीय मदद मिलती रहेगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
2. **बृहस्पति+चंद्र–**वृश्चिकलग्न में नवमभाव में बृहस्पति+चंद्र की युति कर्कराशि के अंतर्गत होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्र की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति होगी। **'गजकेसरी योग'** की यह सर्वोत्तम स्थिति है क्योंकि यहां चंद्रमा स्वगृही एवं बृहस्पति उच्च का होकर, लग्नस्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान को देखेंगे। 'किम्बहुनायोग' के कारण आपको धन की कोई कमी नहीं रहेगी। आपका पराक्रम तेज होगा। मित्र वर्ग सम्पन्न एवं सहयोगात्मक भावना वाले होंगे। आपको शिक्षा संबधी उच्च डिग्री मिलेगी तथा आपकी संतति भी सुयोग्य एवं संस्कारी होगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'शत्रुमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को शत्रुओं द्वारा धन मिलेगा। कोर्ट-कचहरी से धन मिलेगा।
4. **बृहस्पति+बुध–**बृहस्पति के साथ बुध जातक को व्यापार से धन दिलायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र–**बृहस्पति के साथ शुक्र **'कलत्रमूलधन योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलती है।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'मातृमूल धनयोग'** एवं **भ्रातृमूल धनयोग'** बनायेगा। ऐसे जातक माता का धन मिलेगा। भाईयों से रक्षित धन मिलेगा। मित्रों से धन मिलेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में है। बृहस्पति यहां उच्च का तो राहु शत्रु क्षेत्री होकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। ऐसा जातक धनी एवं विद्वान् होगा। जातक की संतति भी विद्वान व कीर्तिवान होगी। परन्तु भाग्योदय में बाधा आती रहेगी। जातक भाग्य संबंधी, संतान संबंधी गुप्त परेशानियों से घिरा रहेगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक का भाग्योदय संघर्ष के साथ करायेगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति दशम स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। बृहस्पति यहां दशम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में है। बृहस्पति के कारण 'केसरीयोग' एवं '**कुलदीपक योग**' बनाता हैं ऐसा जातक राज सरकार व राजनीति में '**कुलदीपक योग**' बनाता है। ऐसा जातक राज-सरकार व राजनीति में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा। जातक को माता-पिता का सुख मिलेगा। स्त्री-संतान का सुख मिलेगा। जातक को अध्ययन-अध्यापन कार्यों में रुचि होगी। जातक धर्मोपदेशक होगा।

दृष्टि–दशमस्थ बृहस्पति की दृष्टि धनभाव (धनु राशि), चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) एवं षष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक धनवान होगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। गुप्त शत्रु होंगे। जो परेशान करेंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 5 के अनुसार पंचमेश यदि दशम स्थान में हो तो व्यक्ति राजा के समान ऐश्वर्य भोगने वाला, राज्य में उच्चा अधिकारी, ग्रंथकर्त्ता या प्रसिद्ध पत्रकार होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक को राजकीय पद-प्रतिष्ठा सम्मान मिलेगा। धन की प्रप्ति होगी। भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य '**रविकृत राजयोग**' बनायेगा। ऐसे जातक को राज्य (सरकार) में उच्च पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न के दशम भाव में बृहस्पति+चंद्र की युति सिंह राशि में होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश के साथ युति होगी। यहां दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होकर क्रमशः '**यामिनीनाथ योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' की सृष्टि कर रहे हैं। यहां बैठकर दोनों ग्रह धनस्थान, सुख स्थान एवं षष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति अल्प प्रयासों से होती रहेगी। सुख में वृद्धि होगी। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। शत्रुओं का नाश होगा। यह योग आपके लिए अत्यन्त शुभ है।

3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगलहोने से जातक नगर, गांव का प्रमुख एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को व्यापार से धन दिलायेगा। जातक बुद्धि बल से बड़ा नाम व धन कमायेगा।

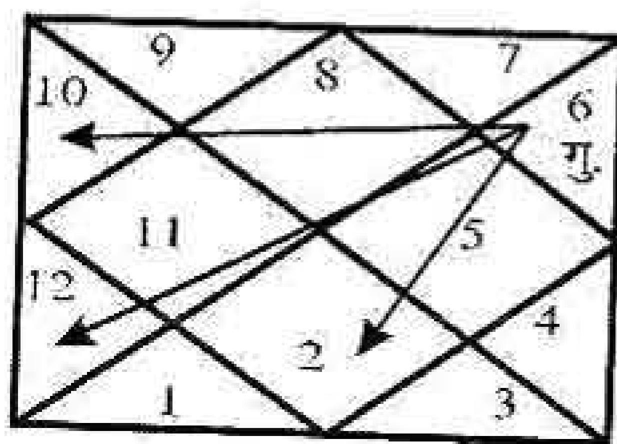
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को विवाह के बाद धनी बनायेगा। जातक का जीवनसाथी सुन्दर व धनी होगा।

6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को 'करोड़पति' बनायेगा। उसे जीवन के सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति सहज में होगी।

7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में है। बृहस्पति यहां मित्र राशि में तो राहु शत्रु राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। केन्द्रस्थ बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' व '**केसरी योग**' भी बन रहा है। जातक को सरकारी नौकरी में बाधा आयेगी। व्यापार में रुकावट, फिर भी जातक यशस्वी होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु राजसुख में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति एकादश स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। एकादश स्थान में बृहस्पति कन्या (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान, दूरदर्शी होगा। जातक को जमीन-जायदाद का लाभ होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि Educational Degree मिलेगी। प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होगा।

दृष्टि–एकादश स्थान में बृहस्पति की दृष्टि तृतीय स्थान (मकर राशि), पंचम भाव (मीन राशि) एवं सप्तम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। उसे उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। पत्नी सुन्दर, सुशील व पतिव्रता होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 6 के अनुसार पंचमेश यदि एकादश स्थान में हो तो व्यक्ति बड़ा विद्वान, महान् लेखक, धनवान एवं लोकप्रिय व्यक्ति होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगीं जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ देगी। धन-विधा में बढ़ोत्तरी देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को बड़े भाई का सुख देगा। व्यापार में लाभ देगा।

2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न में एकादश भाव में बृहस्पति+चंद्र की युति कन्या राशि में होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम स्थान को देखेंगे। फलतः जातक का पराक्रम बढ़ेगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। इसके बाद प्रथम संतति के बाद जातक का दूसरा भाग्योदय होगा। जातक समाज का धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहर्स्पति के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक के पास स्थाई सम्पत्ति होगी।

4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ उच्च का बुध जातक को व्यापार से धन देगा।

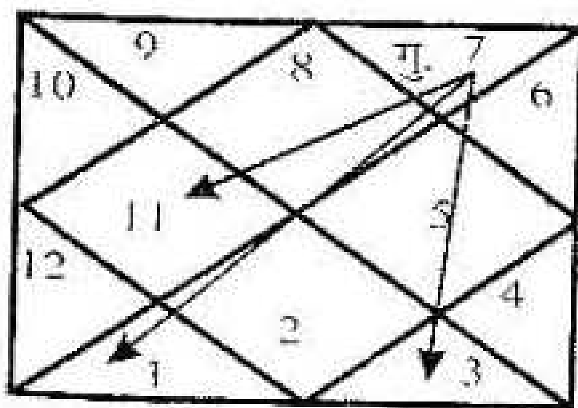
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ नीच का शुक्र जातक को विवाह के बाद धनी बनायेगा।

6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को भौतिक उपलब्धियों से परिपूर्ण करेगा।

7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु स्वगृही होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। ऐसा जातक विद्यावान होगा। पुत्रवान व धनी होगा। गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा। परन्तु राहु के कारण व्यापार-व्यवसाय में बाधा आती रहेगी। तथा संतान की उन्नति में भी जातक को निरन्तर बाधा-रुकावट महसूस होती रहेगी।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक का चलता उद्योग या व्यापार बन्द करायेगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति द्वादश स्थान में



वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। यहां द्वादश स्थान में बृहस्पति तुला (शत्रु) राशि में है। बृहस्पति के कारण '**धनहीन**

योग' एवं **'संतानहीन योग'** बनेगा। ऐसे जातक की विद्या अधूरी छूट जायेगी। संतान को लेकर परेशानी रहेगी। जातक को धन प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। योग्य (पुत्र) संतान की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठानों का सहारा लेना पड़ेगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि), षष्टम भाव (मेष राशि) एवं अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक ऋण, रोग व शत्रुओं से परेशान रहेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 2 के अनुसार पंचमेश यदि बारहवें स्थान पर हो तो ऐसा जातक अपने पिता से शत्रुओं जैसा व्यवहार करता है। उसका पिता दूसरे का लड़का गोद में लेता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य **'राजभंग योग'** बनायेगा। जातक को सरकारी नौकरी प्राप्त करने में दिक्कतें आयेगी। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न के द्वादशस्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति तुला राशि में होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुखस्थान, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को देखेंगे। द्वादशस्थ इन दोनों ग्रह के कारण क्रमशः **'धनहीन योग'**, **'संतानहीन योग'** एवं 'भाग्यहीन योग' की सृष्टि होगी। फलतः यहां **'गजकेसरी योग'** की ज्यादा सार्थकता नहीं है। ऐसे जातक को धनहानि का सामना करना पड़ेगा। संतान प्राप्ति में विलम्ब होगा तथा भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। पर इस **'गजकेसरी योग'** के कारण जातक सभी संकट व संघर्ष से पार पा लेगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को परिरम का फल नहीं मिलेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध यहां **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी-मानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'विलम्ब विवाह योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को विवाह का सुख नहीं मिलेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि उच्च का **'पराक्रमभंग योग'** एवं